ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

# Contents (Hindi)


| S.No. | Particular | Subject | Page No. | |
|---|---|---|---|---|
| | | | From | To |
| 1. | **वैदिक दृष्टिकोण में श्रद्धा-विमर्श**<br>**Shraddha in the Vedic Perspective**<br>कामना विमल शर्मा, दिल्ली, भारत | संस्कृत | H-01 | H-04 |
| 2. | **बाल और किशोर अपराध-एक चुनौती पूर्ण समस्या**<br>**Child and Juvenile Delinquency - A Challenging Problem**<br>मीरा सिंह, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत | समाजशास्त्र | H-05 | H-09 |
| 3. | **संथाल समाज में बारह मास में तेरह त्योहार**<br>**Santals Celebrate Thirteen Festival in Twelve Months**<br>बुद्धदेव बिस्वास, पश्चिम बंगाल, भारत | संताली और ग्रामीण प्रबंधन | H-10 | H-12 |
| 4. | **चिन्ता पर योग का प्रभाव एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन**<br>**Effect of Yoga on Anxiety A Psychological Study**<br>सबीहा परवीन, रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत | मनोविज्ञान | H-13 | H-16 |
| 5. | **राजस्थानी-पगड़ी कला**<br>**Rajasthani-Turban Art**<br>लक्ष्मी कान्त शर्मा, जयपुर, राजस्थान, भारत | चित्रकला | H-17 | H-19 |
| 6. | **रामकिंकर बैज के शिल्प में मानवीय संवेदना: एक अध्ययन**<br>**Human Sensation in the Crafts of Ramkinkar Baij: A Study**<br>सारिका शर्मा एवं रीतिका गर्ग, राजस्थान, जयपुर, भारत | चित्रकला | H-20 | H-24 |
| 7. | **राजस्थान में स्थानीय राजनीति में महिला सशक्तीकरण (73 वें व 74वें संशोधन के संदर्भ में)**<br>**Women Empowerment in Rajasthan (In the 73rd And 74th Days of Amendment Issues)**<br>सीमा टेलर (बेदी), बीकानेर, राजस्थान,भारत | राजनीतिक विज्ञान | H-25 | H-27 |
| 8. | **नागार्जुन के उपन्यास बाबा बटेसर नाथ में व्यंग्य**<br>**Satire in Nagarjuna's novel Baba Bateshwar Nath**<br>विभा सिंह, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत | हिन्दी | H-28 | H-30 |
| 9. | **कालीदास की पर्यावरण चेतनाः अभिज्ञानशाकुन्तलम् एवं रघुवंशम् महाकाव्य के विशेष सन्दर्भ में**<br>**Environmental Consciousness of Kalidasa: With Special Reference to the Epic Abhijnana Shakuntalam and Raghuvansham**<br>प्रत्यंचा पाण्डेय, ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश,भारत | प्राचीन इतिहास | H-31 | H-33 |

SSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

# वैदिक दृष्टिकोण में श्रद्धा-विमर्श

# Shraddha in the Vedic Perspective

Paper Id: 15617, Submission Date: 10/01/2022, Date of Acceptance: 18/01/2022, Date of Publication: 24/01/2022

**कामना विमल शर्मा**
सहायक प्रवक्ता,
संस्कृत विभाग,
दौलतराम महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

सारांश

**वेदोखिलो धर्ममूलम्** और इस वैदिक धर्म के मूलाधार हैं श्रद्धा और तर्क। वेदोक्त धर्म को समझने के लिए श्रद्धापूर्ण आस्तिक्य बुद्धि अपरिहार्य है - **श्रत् सत्यं दधाति यथेच्छया सा श्रद्धा** अर्थात् जिससे मनुष्य सत्य को धारण करता है, उस इच्छा को श्रद्धा कहते हैं। वैदिक मन्त्रों और भाष्यों से श्रद्धा का सत्य से घनिष्ठ संबंध सिद्ध है परन्तु इस भारतीय आस्तिक्यबुद्धि की सत्यप्रतिबद्धता से अपरिचित पाश्चात्य विद्वान् एवं कुछ भारतीय विचारक इसे कट्टरता अथवा अन्धविश्वास का नाम देते हैं। पाश्चात्य दृष्टिकोण में, श्रद्धा अर्थात् विश्वास धर्म का विषय है और तर्क अर्थात् प्रमाणों द्वारा पुष्टिकरण विज्ञान का। जहाँ धर्म हो, वहां तर्क अपेक्षित नहीं और विज्ञान के क्षेत्र में श्रद्धापूर्ण दृष्टिकोण बाधक होगा। पाश्चात्य सन्दर्भ में इस तर्कविहीन श्रद्धा ने धर्म को संकीर्ण, अपरिवर्तनीय, सर्वथा अनुकरणीय, असन्दिग्ध एवं अनुत्तरदायी बना दिया। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के युक्त सुकरात, गैलेलिओ जैसे विचारकों के मतों को इसने विरोध के रूप में लिया और दबाने का प्रयास किया। वहीँ से पाश्चात्य मान्यता कि श्रद्धा और तर्क परस्पर विरोधी है, ने जन्म लिया। पाश्चात्य अंधानुकरण की प्रवृति ने हम भारतीयों को भी अपने श्रद्धा और तर्क सम्मत धर्म पर अविश्वास करने के लिए प्रेरित किया।

**वैदिक** दृष्टिकोण में श्रद्धा और तर्क परस्पर विरोधी नहीं वरन् पूरक हैं। वेदों में दोनों का ही महत्त्व समान रूप से प्रतिपादित हैं और वैदिक ऋषि श्रद्धा-मेधा के समन्वित रूप के लिए प्रार्थना करता है - **अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे, स मे श्रद्धां च मेधाम च जातवेदाः प्रयच्छतु।** सच्ची श्रद्धा ही सत्य प्राप्ति अर्थात् सच्चे सुख और आनंद की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग है। यह श्रद्धा जिज्ञासाओं को प्रेरित करके मानव को सूक्ष्म तथा बृहत सत्य की खोज में लगाती है। अध्यात्म विद्या का गौरव यह श्रद्धा मानव में अपने क्रियात्मक बुद्धि अथवा तर्क रूप में प्रवृत होती है। इस बुद्धि का वेदों में विज्ञानवती यथार्थ धारणावती शुद्ध बुद्धि के रूप में वर्णन किया गया है।

**वेदोखिलो धर्ममूलम्** and the foundations of this Vedic religion are Shraddha and tarka. To understand the Vedokta *Dharma*, reverent theistic intelligence is indispensable - **श्रत् सत्यं दधाति यथेच्छया सा श्रद्धा**, that is, the desire by which a person imbibes truth is called *shraddha*. The close relation of faith with truth is proved from Vedic mantras and commentaries. But western scholars and some Indian thinkers, unfamiliar with the true commitment of this Indian belief, give it the name of bigotry or superstition. In the western view, Reverence is a matter of religion and logic meaning confirmation by evidence is a matter of science. Where there is religion, logic is not required and a reverent approach in the field of science will be a hindrance. This irrational belief in the western context has made religion narrow, unchanging, completely exemplary, unquestionable and unresponsive. It took the views of thinkers like Socrates, Galileo with a scientific approach as opposition and tried to suppress it. From there the Western belief that faith and logic are contradictory, took birth. The tendency of blind imitation of western also inspired us to distrust our faith and logical religion.

In the Vedic view, *Shraddha (Reverence)* and tarka (reasoning) are not contradictory but complementary. The importance of both is equally expounded in the Vedas and the Vedic sage prays for a syncretic form of **अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे, स मे श्रद्धां च मेधाम च जातवेदाः प्रयच्छतु**. True reverence is the only way to attain truth, that is, to attain true happiness and bliss. This reverence inspires curiosity and engages man in the search of subtle and greater truth, Pride of Spirituality This faith is inculcated in human beings in their functional intellect or reasoning form. This intellect has been described in the Vedas as ViJnanavada Reality Dharmavati Pure Wisdom.

**मुख्य शब्दः** श्रद्धा, तर्क, वेद, जिज्ञासा, बुद्धि, विज्ञान।
**Keywords:** Faith, Logic, Vedas, Inquisition, Intelligence, Science.

**प्रस्तावना**

श्रद्धा एवं तर्क को सामान्यतः परस्पर विरोधी माना जाता है पर एक के अभाव को दर्शाने के लिए दूसरे का आश्रय लिया जाता है। दोनों के विषय एवं क्षेत्र भी भिन्न-भिन्न बताए जाते हैं। जहां धर्म को श्रद्धा का विषय बताकर तर्क की उपस्थिति को अवांछनीय बताया जाता है वहीं विज्ञान को विशुद्ध तर्क का क्षेत्र माना जाता है जहां श्रद्धा बाधक होगी। वस्तुतः यह श्रद्धा और तर्क के विरोध की मान्यता भारत में अज्ञान एवं पाश्चात्य अंधानुकरण की प्रवृत्ति के कारण प्रचलित हुई। वर्षों तक विदेशी प्रभाव में रहने के कारण भारतीयों ने जहां एक और अपने ज्ञान के स्रोतों वेदादि शास्त्रों के ज्ञान को विस्मृत कर दिया वहीं दूसरी ओर शासक एवं समृद्ध वर्ग के अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण पाश्चात्य धर्म संस्कृति विचार भाषा एवं मान्यताओं को स्वीकार करने लगे। परिणामस्वरूप जो बौद्धिक एवं वैचारिक समस्याएं वस्तुतः भारतीय संस्कृति में है ही नहीं उनसे भ्रमित होने लगे। स्वयं भ्रमित होते हुए पश्चिमी विद्वानों की भांति ही अपनी स्थिति के लिए भारतीय संस्कृति को दोष देने लगे जिसमें जीवन को दिग्भ्रमित करने वाला श्रद्धा तर्क विरोध कभी था ही नहीं।

पश्चिमी देशों में एक ही धर्म था और वह भी राजकीय धर्म। वहां उस धर्म ने राज व्यवस्था और न्याय व्यवस्था को इतना प्रभावित किया कि चर्च ने कट्टर रूप धारण कर लिया। चर्च के कार्यों में, धार्मिक रचनाओं पर किसी भी प्रकार के संदेह की, प्रश्न की अनुमति न थी। केवल श्रद्धा ही अभीष्ट थी। तर्क को धर्म के क्षेत्र में कोई स्थान न रहा। इस कारण ही धार्मिक असहिष्णुता और अंधश्रद्धा ने जन्म ले लिया। संकीर्णताओं और बाध्यताओं से जूझते मानवो ने इसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। चर्च के अधिकारों को कम करने के साथ ही उन्होंने श्रद्धा को भी अस्वीकार कर के उसके स्थान पर तर्क को स्वीकार किया अर्थात प्रमाणों के द्वारा परीक्षण, जीवन का नवीन सिद्धांत बन गया। निस्संदेह शुष्क तर्क की प्रधानता के कारण पाश्चात्य देशों के निवासी अब आध्यात्मिकता के प्रश्नों का सामना करने लगे। इस प्रकार पाश्चात्य देशों में श्रद्धा एवं तर्क के मध्य संघर्ष चलता रहा है।

परंतु भारतीय संदर्भ में यह विरोध अर्थहीन है। भारतीय सनातन धर्म के कोष स्वरूप वैदिक धर्म में विज्ञान अंग रूप में विद्यमान है। यही कारण है कि वैदिक परंपरा में विज्ञान एवं आध्यात्म परस्पर संयुक्त है न कि पृथक शाखा के रूप में। विश्व की अद्यतन वैज्ञानिक खोजों को आज से हजारों वर्षों पूर्व उनके सत्य रूप में जानकर चाहे वह गणित शास्त्र हो या शल्यक्रिया, रसायन विद्या हो अथवा भौतिक शास्त्र, उनसे संपूर्ण विश्व को लाभान्वित करने वाले वैदिक धर्म में श्रद्धा और तर्क जितना धर्म के लिए आवश्यक है उतना ही विज्ञान के लिए भी। वैदिक काल में माननीय जीवन श्रद्धा एवं तर्क के समन्वित रूप से प्रेरित एवं प्रोत्साहित होता था। आइंस्टाइन ने विज्ञान और धर्म के संबंध को बताते हुए कहा है कि धर्म के बिना विज्ञान पंगु है और विज्ञान के बिना अंधा है। वैदिक ऋषि ज्ञान को अंधश्रद्धा का विषय नहीं मानते जहां प्रश्न के लिए स्थान न हो। प्रश्नोत्तर शैली वैदिक ज्ञान परंपरा की विशिष्टता है जहां गुरु शिष्य परंपरा में शिष्य अत्यंत श्रद्धा पूर्वक तत्वज्ञान की इच्छा से गुरु से प्रश्न पूछता है और गुरु के द्वारा प्रदत तथा शास्त्रों में वर्णित ज्ञान हो स्वयं तर्कों द्वारा अनु प्रमाणित करता है। ऐसा वह ज्ञान स्वतः ही उस शिष्य का अपना दर्शन अथवा दृष्टिकोण बन जाता है।

वैदिक ज्ञान के चरम औपनिषदिक धर्म की प्रवृत्ति है ज्वलंत श्रद्धा के साथ संदेह होना, निर्भीक प्रश्नकर्ता मन, और सत्य की खोज के लिए श्रद्धा द्वारा प्रेरित बुद्धि, स्वयं पर विश्वास पर, कल्याण की भावना से ज्ञात का उपदेश। श्रद्धा संदेह का गला नहीं घोटती वरन संदेह युक्त बुद्धि को सत्यान्वेषण के लिए सन्मार्ग पर प्रेरित करती है और पथ प्रदर्शन करती है।

लौकिक आध्यात्मिक ज्ञान की प्रत्येक शाखा में जिसका लक्ष्य व्यक्त से व्यक्त की यात्रा हो ऋषियों ने जिज्ञासा को प्रेरित किया है। जिज्ञासा वस्तुतः श्रद्धा द्वारा प्रेरित तर्क की आकांक्षा है जो श्रद्धा के विषय को बुद्धि का विषय बनाती है। इस प्रकार वैदिक जिज्ञासाओं में श्रद्धा और बुद्धि का उच्च स्थान रहा है। शंकराचार्य के गुरु गौड़पाद मांडूक्योपनिषद में उस वैदिक दर्शन की वंदना करते हैं जो आंतरिक जगत (अध्यात्म अर्थात तथाकथित श्रद्धा का विषय) और बाह्य जगत (विज्ञान अर्थात तथाकथित तर्क का विषय) दोनों के सत्य का अन्वेषण करता है तथा विवादों और विरोधों (श्रद्धा तर्क विरोधिता अथवा श्रेष्ठता संबंधी विवाद) से मुक्त है-

**अस्पर्शयोगो वै नाम सर्वसत्त्वसुखोहितः।**
**अविवादो अविरूद्धश्च देशितः तं नमाम्यहम्॥**

**अध्ययन का उद्देश्य**

भारतीय श्रद्धापूर्ण आस्तिक्य बुद्धि सत्य, तर्क एवं विज्ञान पर आधारित है और इस शोध पत्र का उद्देश्य वेदों में श्रद्धा के स्वरूप को प्रकाशित करना है।

**श्रद्धा शब्द का अर्थ एवं वेदों में श्रद्धा का महत्व**

श्रद्धा शब्द श्रत और धा से जुड़ कर बना है। श्रत का अर्थ है सत्य (निघण्टु) धा धातु का अर्थ है भरण पोषण करना। अतः श्रद्धा का अर्थ है सत्य को धारण करना और उसे परिपुष्ट करना या प्रबल बनाना - **श्रतं सत्यम् दधाति यथेच्छया सा श्रद्धा** - अर्थात मनुष्य जिस इच्छा से सत्य को धारण करता है, वह श्रद्धा है। आचार्य दयानन्द के अनुसार सत्य धारण में प्रीति और सत्य धार्मिक जनों में प्रीति ही श्रद्धा है। यजुर्वेद के मंत्र –

**व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।**
**दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥**

पर महीधर भाष्य में कहते हैं –

**श्रतं सत्यम् धीयते यस्याम् सा श्रद्धा आस्तिक्यबुद्धिः पुण्यवेताम् मनोविशेषः।**

अर्थात जिसमे सत्य स्थापित किया जाता है ऐसी आस्तिक्यबुद्धि जो पुण्यकारियों की विशेष मनोविशेष या मनोवृत्ति है।

श्रद्धा के बिना आत्मसाक्षात्कार संभव नहीं। यह अध्यात्म का प्रथम सोपान है। श्रद्धा का फलक विस्तृत है। इसके अंतर्गत स्वयं पर श्रद्धा, जीव मात्र में श्रद्धा, संसार में श्रद्धा. प्रभु में श्रद्धा, संपूर्ण अस्तित्व में श्रद्धा सम्मिलित है। श्रद्धा प्रेमभाव का विकास है। यह भेदभाव से दूर अपने साथ-साथ दूसरों की आस्था का भी सम्मान करने वाली है। विश्व शांति हेतु श्रद्धा आवश्यक है। यह संकीर्णताओं से परे है।

श्रद्धा का सत्य से घनिष्ठ संबंध है। यही कारण है कि सत्य को धारण करने की इच्छा, सत्य को धारण करने की क्रिया, सत्य और सत्य वादियों में प्रीति और दृढ़ विश्वास सत्य को दृढ़ता पूर्वक धारण करना और बड़ी से बड़ी आपति या प्रलोभन आने पर भी विचलित न होना यही सच्ची श्रद्धा है। ऋग्वेद का श्रद्धा सूक्त जिसमे श्रद्धा का अत्यंत महिमामय वर्णन किया गया है और ऋषिका भी श्रद्धा नाम से विख्यात है, के अनुसार श्रद्धा ज्ञानाग्नि अथवा आत्माग्नि की प्रदीपिका है **श्रद्धया समिध्यते आत्मैवाग्नि**/ गीता भी ज्ञान प्राप्ति के लिए श्रद्धा को अनिवार्य मानती है - **श्रद्धावान लभते ज्ञानम्** - श्रद्धालुओं को ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। सामवेद में श्रद्धा का माता रूप में प्रतिपादन किया गया है। **श्रद्धा मातामनुः कविः** - क्रांतदर्शी तत्वदर्शी श्रद्धा माता का अनुसरण करता है अर्थात श्रद्धा तत्वज्ञान के मार्ग पर प्रेरित करती है। वेदों में श्रद्धा की महिमा बताई गई है वह अंधश्रद्धा न होकर प्रत्यक्षादि प्रमाणों से अर्थात तर्क द्वारा परीक्षित अतः सत्य निष्ठ है। वह सत्य धर्म में प्रीति, सत्य धारण की क्रिया, इच्छा व बुद्धि है। सत्य निष्ठा के कारण इसका तक विहीन होना सर्वदा असंभव है।

वेदों में तर्क का अर्थ व महत्व ऋग्वेद में शुद्ध बुद्धि की प्रार्थना की गई है। ऋग्वेद में उत्तम बुद्धि विषयक प्रार्थना की गई है। वेदों में तर्क का मेधा के रूप में चित्रण किया गया है जिसका अर्थ बताते हुए उसे विज्ञानवती यथार्थ धारणा वती बुद्धि कहा गया है। यह सत्यासत्य, धर्माधर्म, पाप पुण्य, कर्तव्याकर्तव्य का विवेचन करने वाली तर्क बुद्धि होती है जो श्रद्धा का आधार और उसको बढ़ाने वाली है। अथर्ववेद में - **मेधामहं प्रथमां ब्रह्मणवतीम** - में इसे प्रथमा बुद्धि कहने से इसे सभी बुद्धियों में श्रेष्ठ अथवा प्रथम कहा गया। साथ ही ब्रह्मणवती की उपाधि इसका वेदाधारित होना सिद्ध करती है। सत्य से प्रकाशमान सभी विद्वानों, शिल्पियों, ऋषियों और योगियों के द्वारा सेवित इस कल्याणकारी शुद्ध बुद्धि को हम अपने अंतर में सदा धारण करें यह प्रार्थना इस मंत्र में की गई है –

**यां मेधामृभवो विदुर्यां मेधामसुराः विदुः।**
**ऋषयोः भद्राम् मेधाम् या विदुस्तां मय्या वेशयामसि।**

अथर्ववेद में देवी प्रमति के रूप में इसी प्रकृष्ट, सूक्ष्म और तीव्र बुद्धि की प्रार्थना की गई है जो कार्य आरंभ करने के लिए आवश्यक है। ऋग्वेद में तो श्रद्धा का गौरव और महत्व का विस्तारपूर्वक वर्णन है। श्रद्धा अभीष्ट फलदात्री, वैभव की अधिष्ठात्री है –

**श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते।**
**श्रद्धा हृदययाकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु॥**

गीता में प्रकाशवान निर्माणात्मक और क्रियाशील बुद्धि को मानव जीवन के लिए आवश्यक बताते हुए कहा गया है - *बुद्धौ शरणम् अन्विच्छ।*

प्राचीन भारतीय दर्शन व शास्त्रों में तर्क शास्त्रीय प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है।

**श्रद्धा तर्क बुद्धि समन्वय**

भारतीय दृष्टिकोण में अथवा वैदिक दृष्टिकोण में श्रद्धा एवं तर्क के विरोध का अभाव है। मानव जीवन के लिए दोनों की अनिवार्यता है तथा श्रद्धा और तर्क परस्पर आत्मनिर्भर अथवा आश्रित हैं। यह परस्पर पूरक एवं एक दूसरे के लिए प्रेरक हैं। ऋग्वेद में छुरी की धार सी तेज बुद्धि की प्रार्थना की गई है। साथ ही समान मंत्र में ही दिव्य गुणों से युक्त भक्त बनाने की प्रार्थना प्राप्त होती है- यह वैदिक दर्शन का उदाहरण है जिसमें श्रद्धा और तर्क बुद्धि में कोई विरोधाभास नहीं है। बुद्धि को तेज, पवित्र, सूक्ष्म व विकसित करने की प्रार्थना की गई है ताकि सत्यासत्य का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकें। अथर्ववेद में

श्रद्धा और मेधा दोनों के समन्वय को दर्शाते हुए दोनों के लिए अग्निदेव से प्रार्थना करते हुए कहा गया है –

**अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे।**
**स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्रयच्छतु॥**

श्रद्धा विहीन तर्क के दुष्परिणाम श्रद्धा के अभाव को अश्रद्धा कहा जाता है। अश्रद्धा पर आधारित तर्क लक्ष्यहीन वाहन के समान भ्रमित हो जाता है और अपने निष्कर्ष को प्राप्त नहीं कर पाता है। यदि कोई वैज्ञानिक बिना किसी हाइपोथेसिस की स्थापना के लिए शोध करता है तो संभवत वह निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व ही अपने शोध को संपूर्ण मान लेगा अथवा निष्कर्ष प्राप्ति पर पहुंचने के बाद भी उसे स्वीकार नहीं कर सकेगा। यह श्रद्धा विहीन तर्क कुतर्क में परिवर्तित हो जाता है। नकारात्मक प्रवृत्ति के कारण यह संदेह युक्त रहता है तथा दोषदर्शिता की प्रवृति को प्राप्त कर लेता है अर्थात चारों ओर निराशा, अनिष्ट, आशंकाओं और असुरक्षा को देखता है। उसके पास तथ्य होते हैं परंतु जीवन मूल्य नहीं। ऐसे वैज्ञानिक एटम बम और न्यूक्लियर बम जैसे विध्वंसकारी शस्त्रों या यंत्रों की रचना करते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए मानव जीवन का मूल्य नगण्य होता है स्वयं का तथा औरों का भी। यह शुष्क तर्क युक्तिवाद में फंसा रहता है और कर्तृत्व शक्ति तथा निर्माण शक्ति से शून्य होता है।

तर्क विहीन श्रद्धा - इसे अति श्रद्धा या अंधश्रद्धा कहना उचित होगा। यह मानव को अज्ञानी और असहिष्णु बनाती है। अंधश्रद्धा के कारण वह सत्य का अनुकरण नहीं कर पाता और सत्य के अभाव में सत्य निष्ठ श्रद्धा भी उसक त्याग कर देती है। तब अपनी छद्म श्रद्धा को वास्तविक एवं सत्य सिद्ध करने के लिए वह अपने मत की स्थापना और अन्य मतों के खंडन हेतु प्रपंच रचता है और अज्ञान के अंधकार को और अधिक गहरा कर लेता है। इस श्रद्धा को भक्ति का नाम देना उचित नहीं होगा क्योंकि यह अपने श्रद्धेय तक पहुंचने में सफल नहीं हो सकती। भक्ति के लिए ज्ञान को अनिवार्य बताते हुए गीता में कहा गया है - *न हि ज्ञानेन सदृशं*।

गुरु और शास्त्र के वाक्यों के सत्य को तर्क द्वारा प्रमाणित करने को बुद्धिमान लोग श्रद्धा कहते हैं जिससे वस्तु का लाभ होता है अंतर में उपस्थित सत्य का लाभ होता है। यहां सत्य बुद्धि अवधारणा श्रद्धा के लिए तर्क की अनिवार्यता को दर्शाता है। अंधश्रद्धा परंपराओं के रूप में, अंधविश्वासों के रूप में अपना साम्राज्य बनाए रखती है। इसे चमत्कारों की अपेक्षा होती है। सत्य से दूर होने के कारण यह स्वयं भी असत्य होती है। इसमें निर्माण शीलता का अभाव होता है और यह आत्मघाती होती है अर्थात स्वयं अंधश्रद्धावान व्यक्ति का सर्वनाश कर देती है। कुपात्र पर श्रद्धा भी अश्रद्धा का ही अन्य रूप है जिससे व्यक्ति भ्रमित एवं दिशाहीन हो जाता है। वर्तमान समय में स्वघोषित स्वयंभू धर्मगुरुओं पर अत्यंत श्रद्धा के दुष्परिणाम ज्ञात ही हैं। अतः अंधश्रद्धा उचित नहीं है। गीता में कहा गया है अज्ञश्च अश्रद्धानश्च संशयात्मा विनश्यति अर्थात अज्ञानी, श्रद्धा से रहित तथा संशय में पड़ा व्यक्ति सर्वनाश को प्राप्त करता है।

**निष्कर्ष**

अतः **वैदिक** संस्कृति में प्रतिपादित श्रद्धापूर्ण तर्कशीलबुद्धि सभी वैचारिक एवं धर्मसम्बन्धी विरोधाभासों का निराकरण करने में सक्षम है और वर्तमान समय में विश्व में व्याप्त विभ्रम को दूर करने के लिए अनुकरणीय है। वर्तमान समस्याओं का समाधान वेदों में वर्णित है। यदि वैदिक श्रद्धा तर्क समन्वय पर शिक्षा प्रणाली आधारित हो तो श्रेष्ठ बुद्धि और सच्ची श्रद्धा से समग्र चरित्र निर्माण संभव है विशुद्ध वैदिक दृष्टिकोण से युक्त आस्तिक्य बुद्धि संपन्न मानव ही विश्व की समस्याओं को श्रद्धा-तर्क समन्वय के आधार पर सुलझा सकता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *मांडूक्योपनिषद 4.2*
2. *यजुर्वेद 19.30*
3. *महीधर (यजुर्वेद 19.30)*
4. *ऋग्वेद 10.151.1-5*
5. *श्रीमद्भगवद्गीता 4.39*
6. *सामवेद 1.9.10*
7. *अथर्ववेद 6.108.2*
8. *अथर्व. 6.108.3*
9. *ऋग्वेद 10.151.3*
10. *श्रीमद्भगवद्गीता 2.49*
11. *शाङ्खायन गृह्यसूत्र 5.68*

SSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

# बाल और किशोर अपराध-एक चुनौती पूर्ण समस्या

# Child and Juvenile Delinquency - A Challenging Problem

Paper Id: 15564 Submission Date: 10/01/2022, Date of Acceptance: 20/01/2022, Date of Publication: 24/01/2022

**मीरा सिंह**
एसोसियेट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग,
आगरा कॉलेज, आगरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

पिछले कुछ वर्षो में बाल और किशोर अपराध के साथ-साथ बच्चों में विकृत असामान्य व्यवहार के मामलों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। बच्चों की ओर से आक्रामक मनोवृत्ति का प्रदर्शन करने और यहाँ तक कि हिंसा, हत्या, दुष्कर्म के घटनाओं में शामिल होने की खबरें अब आये दिन दिखायी पड़ रही हैं। समस्या गांव से लेकर नगर और गरीब से लेकर अमीर, सभी तबकों में जिस तरह से फैल रही है वह एक महामारी का रूप धारण कर सकती है। इस खतरनाक हालत की वजहें जानने की कोशिश के साथ उनके समाधान में शिक्षा-व्यवस्था की भूमिका पर गंभीरता से विचार होना चाहिये। इस क्रम में यह भी देखा जाना चाहिये कि क्या सिर्फ बच्चों का ही शिक्षण पर्याप्त है ? पिछले कुछ सालों में भारतीय समाज काफी बदल गया है। नगरीकरण, शिक्षा, रोजगार इत्यादि के लिए नई जगहों में प्रवास, टूटते संयुक्त परिवार और बढ़ते हुये एकल परिवार के साथ आधुनिक जीवन शैली ने दवाबों को जन्म दिया हैं। ऊपर से कोढ में खाज की तरह टेलीविजन, इंटरनेट, सोशल मीडिया के उफान ने बच्चें को एक अंधी सुरंग में ढकेल दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप बाल और किशोर अपराधियों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है।

In the last few years, there has been a phenomenal increase in cases of child and juvenile delinquency as well as perverted abnormal behavior among children. There are reports of children displaying aggressive attitude and even being involved in incidents of violence, murder, rape. The way the problem is spreading from village to city and from poor to rich, it can take the form of an epidemic. Along with trying to know the reasons for this dangerous condition, the role of education system in their solution should be seriously considered. In this sequence it should also be seen whether the education of children alone is sufficient. Indian society has changed a lot in the last few years. Modern life style with urbanization, migration to new places for education, employment etc., broken joint family and growing nuclear family has given rise to pressures. Like leprosy from above, the boom of television, internet, social media has pushed children into a dark tunnel, resulting in a huge increase in the number of juvenile and juvenile offenders.

**मुख्य शब्दः** बाल अपराध, ज्यूनाइल ज्यूडिसप्रूडेन्स, न्यायपालिका पुलिस, किशोर अपराध।

Juvenile Delinquency, Juvenile Judiciary, Judiciary Police, Juvenile Delinquency.

**प्रस्तावना**

बाल अपराध किसी राज्य के कानून द्वारा निर्धारित आयु सीमा से कम आयु वाले बालक द्वारा किया गया ऐसा व्यवहार है जिससे उस राज्य की किसी आपराधिक संहिता तथा साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक संहिताओं एवं मूल्यों का उल्लघंन होता है और जिसके लिये कानूनी कार्यवाही व दण्ड व्यवस्था वयस्कों से भिन्न होती है। बाल और किशोर अपराध आधुनिक संसार की एक गम्भीर समस्या है। आज तक किसी विशेष देश या समाज की समस्या नहीं है, प्रत्युत विश्वव्यापी समस्या है। वर्तमान समय में विषम व जटिल सामाजिक आर्थिक व्यवस्था से सम्बद्ध आधुनिक नगरीय तथा औद्योगिक परिवेश में बाल और किशोर अपराधों के साथ-साथ बच्चों में विकृत असामान्य व्यवहार के मामलों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। बच्चों की ओर से आक्रामक मनोवृत्ति का प्रदर्शन करने और यहाँ तक कि हिंसा, हत्या, दुष्कर्म की घटनाओं में शामिल होने के समाचार अब आये दिन दिखायी पड़ते है। औद्यौगीकरण तथा नगरीकरण, शिक्षा, रोजगार इत्यादि के लिए नई जगहों में प्रवास, टूटते संयुक्त परिवार और बढ़ते हुए एकाकी परिवार के साथ आधुनिक जीवनशैली ने परम्परागत भारतीय सामाजिक परिवेश को परिवर्तित कर डाला है। परिणामतः भारत वर्ष में बाल और किशोर अपराध तीव्र गति से एक गम्भीर संकट का रूप धारण करता जा रहा है। तथा देश के विभिन्न भागों में जो आज से कुछ वर्ष पूर्व अनिवार्यतः ग्रामीण क्षेत्रों के ही एक अंग थें, प्रगतिशील औद्योगीकरण के साथ-साथ यह समस्या अनेक पाश्चात्य देशों की भाँति शीघ्र ही समानुपाती हो जायेगी।

| | |
|---|---|
| **अध्ययन का उद्देश्य** | आज बड़ी विडंबना यही है कि बच्चे एवं किशोर हकीकत के सामूहिक-सामाजिक जीवन से अलग-थलग हो रहे है। बाल और किशोर अपराध के कारणों का अध्ययन करना, सामान्य मानव जीवन पर इनके प्रभावों, समाधान के विविध आयामों पर प्रकाश डालना तथा बाल एवं किशोर अपराधियों के भविष्य को संवारना ही प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है। |
| **साहित्यावलोकन** | प्रस्तुत अध्ययन बाल और किशोर अपराध जैसे राष्ट्रीय समस्या का समाजशास्त्रीय विश्लेषण है। विगत् वर्षो में बाल अपराध की घटनायें जटिल एवं औद्यौगिक समाजों में तेजी से बढ़ी हैं। कम उम्र के बालक-बालिकाओं में विभिन्न अपराधों के प्रति बढ़ता रूझान शोध का विषय है। इसी क्रम में सिहं (2008) के अनुसार बाल-अपराध किसी राज्य के कानून द्वारा निर्धारित आयु सीमा से कम आयु वाले बालक-बालिकाओं द्वारा किया गया ऐसा व्यवहार जिससे उस राज्य की किसी आपराधिक संहिता तथा साथ ही सामाजिक, सास्ंकृतिक संहिताओं एवं मूल्यों का उल्लघंन होता है और जिसके लिए कानूनी कार्यवाही व दण्ड व्यवस्था वयस्कों से भिन्न होती है। महाजन एवं महाजन (2015) के अनुसार, बाल अपराध नाना प्रकार के होते हैं तथा इनकी सूची बनाना एक कठिन कार्य है। अनैतिक एवं अशोभनीय व्यवहार करना, चोरी करना, जुआ खेलना, मद्यपान और मादक द्रव्यों का व्यसन करना, दंगा करना, विश्वासघात करना, स्कूल से भाग जाना, अनैतिक एवं बुरे लोगों की संगति में रहना, रात्रि को निरूद्वेश्य घूमना तथा बीड़ी-सिगरेट पीना आदि विविध प्रकार के समाज-विरोधी कार्य बाल एवं किशोर अपराध कहलाते हैं। आहूजा एवं आहूजा (2006) का मानना है कि बाल अपराध के व्यवहार को जन्म देने वाले पारिवारिक पर्यावरण का विश्लेषण टूटे परिवार, पारिवारिक तनाव, माता-पिता के द्वारा तिरस्कार, माता-पिता का नियंत्रण और पारिवारिक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में किया जाता है।<br>इस समस्या का अत्यन्त भयानक पक्ष यह है कि बाल अपराध किशोर तथा वयस्क अपराध का प्रशस्त प्रवेशद्वार है। यह एक सोपान है जहाँ बालक अपराधिकता का प्रथम पाठ पढ़ता है व अपराध करना सीखता है तथा आपराधिक कृत्य करने में दक्षता प्राप्त करता है। बाल्यावस्था व किशोरवस्था में व्यक्ति प्रायः सम्भवतः चंचल, नटखट तथा दुस्साहसी होता है। अतः वह जीवन के विभिन्न प्रलोभनों की ओर शीघ्रता से आकर्षित हो जाता है। यही कारण है कि उसमें अपराधिता की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है, परन्तु आज का बालक व किशोर कल का वयस्क नागरिक होने के कारण यदि उसकी आपराधिक प्रवृत्ति पर समायोचित नियंत्रण नहीं रखा गया तो आगे चलकर वह अभ्यस्त अपराधी बन सकता है। इसी आशंका से प्रेरित होकर आज विश्व के प्रायः सभी देशों में बाल व किशोर अपराधियों को वयस्क अपराधियों से भिन्न समझा जाता है, और इसके लिए पुलिसतंत्र,न्यायालयतंत्र, कारावासतन्त्र से सम्बन्धित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भिन्न दृष्टिकोण अपनाने के लिए नवीन दर्शन प्रदान किया गया है। भारत में किशोर न्याय अधिनियम 1986 के अनुसार बाल अपराध का तात्पर्य ऐसे अपराधों से है जो 18 वर्ष से कम आयु वाली लड़की या 16 वर्ष से कम आयु वाले लड़के द्वारा किये गये हो, परन्तु किशोर न्याय (देख-रेख एवं संरक्षण) अधिनियम, 2000 द्वारा अब यह आयु दोनों लड़के और लड़की के लिये 18 वर्ष कर दी गई है अर्थात् जिस बालक या बालिका ने 18 वर्ष की आयु पूरी नहीं की है, उसे अब बाल-अपराधी माना जाता है। बाल-अपराध विभिन्न प्रकार के होते है। अनैतिक और अशोभनीय व्यवहार करना, चोरी करना, जुआ खेलना, मद्यपान और मादक द्रव्यों का सेवन करना, दंगा करना, विश्वासघात करना, स्कूल से भाग जाना, अनैतिक एवं बुरे आदमियों की संगति में रहना, रात्रि को निरूद्देश्य घूमना, बीड़ी-सिगरेट पीना आदि विविधप्रकार समाज-विरोधी कार्य बाल-अपराध कहलाते है। भौतिकता एवं आधुनिकता की अँधी दौड़ में शामिल माता-पिता के पास आज बच्चों के लिए समय नहीं है और न ही उन्हें यह पता है कि आज की परिस्थितियों जैसे इटंरनेट सोशल मीडिया की आँधी में बच्चों का कैसे मार्गदर्शन करें ? यूरोपीय देशों ने इस समस्या के लिए सामुदायिक बाल केन्द्रों की स्थापना की है। इनमें स्कूल से आने के बाद बच्चों को व्यस्त रखने से लेकर माता पिता को भी प्रशिक्षित किया जाता है। भारत में संसाधनों के अभाव में ऐसी व्यवस्था निकट भविष्य में संभव तो नहीं है, लेकिन अभिभावकों के लिए ग्राम पंचायतों, सामुदायिक केन्द्रों में मानसिक वर्कशाप-व्याख्यान होने चाहिए। |

इसके लिए गैर- सरकारी संगठनों की मदद ली जा सकती है। धनाढय परिवारों में बच्चों के पास इतना पैसा होता है कि उनको पता नहीं चलता कि कैसे खर्च किया जाये। इसलिए वे अंवाछित आदतों के शिकार हो जाते हैं। परिवार के स्थान पर किसी वैकल्पिक संस्था के अभाव में आज का किशोर अकेले ही नैतिकता की लड़ाई लड़ता है जो अपराध रोकने के लिए पर्याप्त नहीं है। बाल एवं किशोर अपराध यद्यपि समाज के लिए एक भयंकर चुनौतिपूर्ण समस्या है, तथापि इस समस्या के निवारणार्थ अब तक किसी स्वरूप मार्ग का अन्वेषण नहीं किया जा सका। राष्ट्रीय अपराध रिपोर्ट ब्यूरो के अनुसार 2103 के आँकड़े दिखाते हैं कि भारतीय दंड संहिता आई0पी0सी0 के तहत बाल अपराधियों के खिलाफ 43,506 और विशेष स्थानीय कानून के तहत किशोरों द्वारा जिनकी आयु 16-18 वर्ष के बीच है उनके खिलाफ 28,830 आपराधिक मामले दर्ज हैं। 16 दिसम्बर 2013 को निर्भया के साथ हुये अमानवीय सामूहिक दुष्कर्म ने पूरे राष्ट्र की सामूहिक चेतना को गहरा आघात दिया। पाँच अपराधियों में एक बाल अपराधी था और वो ही सबसे क्रूर था।

**किशोरों द्वारा 2018-2020 में होने वाले अपराधों की संख्या -**

| राज्य | 2018 | 2019 | 2020 | कुल अपराधों में बाल अपराधों की संख्या (%) |
|---|---|---|---|---|
| पूर्ण राज्य | 28392 | 29022 | 26988 | 6.2 |
| केन्द्र शासित राज्य | 3199 | 3247 | 2780 | 24.1 |
| राष्ट्रीय | 31591 | 32269 | 29768 | 6.7 |

स्रोत- राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो- गृह मंत्रालय 2021

**बाल अपराध के कारण**

बाल-अपराध एक सामाजिक समस्या है। अतः इसके अधिकॉश कारण भी समाज में ही विद्यमान है। इसके प्रमुख कारणों को निम्नांकित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है-

बाल अपराध के पारिवारिक कारण

1. भग्न अथवा टूटा परिवार
2. दुर्व्यसन परिवार
3. अपराधी प्रतिमानों वाले परिवार
4. अनैतिक परिवार
5. माता व पिता का शून्य व्यवहार
6. परिवार में निर्धनता
7. छोटा घर अथवा गोपनीयता का अभाव।

**शारीरिक एवं व्यक्तिगत कारण**

1. शारीरिक असमानतायें
2. शारीरिक दोष
3. बीमारी
4. वंशानुक्रमण
5. अपूर्ण आवश्यकतायें।

**मनोवैज्ञानिक कारण**

सामाजिक अनुसंधानकर्त्ता, विशेषतः मनौवैज्ञानिक चिकित्सक, मस्तिष्क को बाल-अपराध का एक महत्वपूर्ण कारक समझते है। प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारण निम्न है-

1. मानसिक हीनता
2. संवेगात्मक संघर्ष और अस्थिरता
3. कम बुद्वि वाले तथा बड़े बच्चे।

**आर्थिक कारण**

1. निर्धनता तथा पराश्रयता
2. बेरोजगारी
3. निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति
4. व्यापार-चक्र

**सामुदायिक कारण**

1. बुरा पड़ोस
2. स्वास्थ्यप्रद मनोरंजन का अभाव
3. स्कूल की परिस्थिति
4. नगरीकरण
5. आपत्तिजनक साहित्य
6. अपराधी क्षेत्र

**समाधान के विभिन्न आयाम**

बाल एवं किशोर अपराधियों की समस्या के समाधान हेतु विविध आयाम हो सकते है। इस संदर्भ में पहला सुझाव शिक्षा से सम्बन्धित स्कूली शिक्षा में प्राचीन भारतीय संस्कृति के तत्वों का समावेश अर्थात् नैतिक और मूल्यपरक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाय। विगत वर्ष सी0बी0एस0ई0 बोर्ड ने अपने से जुडे स्कूलों मे कक्षा छह से आठ के विद्यार्थियों के लिए तीन वर्षीय मूल्यपरक कोर्स का प्रस्ताव रखा है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को भाईचारा विनय और करूणा से सम्बन्ध मानवीय गुणों की शिक्षा दी जायेगी। दूसरा सुझाव है कि नौवीं से 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए श्रम सम्बन्धित पाठ्यक्रम की अनिवार्यता हो। हमारे गुरूकुलों में राजपुत्र से लेकर सामान्य बालक को भी लकड़ी बीनने से लेकर आश्रम व्यवस्था में हाथ बंटाने के विभिन्न श्रम से संम्बन्धित कार्य करने पडते थे।

आधुनिक युग में स्वामी विवेकानन्द से लेकर गाँधी जी ने भी श्रम के महत्व पर जोर दिया है। यह ठीक है कि आधुनिक युग में लकड़ी बीनने जैसे कार्य संभव नहीं है, लेकिन श्रम सम्बन्धित शिक्षा में बागवानी या विभिन्न हस्तकलाओं जैसी चीजों का ज्ञान कराने से एक तरफ भविष्य में रोजगार की संभावना रहेगी तो दूसरी तरफ श्रम की महत्ता और उसके प्रति सम्मान का भाव भी बच्चों में पनपेगा। इस सबसे उनकी विपुल उर्जा कुप्रभावों की ओर न जाकर एक सकारात्मक दिशा में अग्रसर होगी। बाल एवं किशोर अपराध को घटाने में सार्वजनिक कार्यक्रमों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। अतएवं इस पर बल देना तर्कसंगत है। सामान्य शैक्षणिक सुधार, अभिभावकीय शिक्षा, विद्यालय के उपरान्त अवकाश का सदुपयोग, लोकजीवन का समुन्नयन, लैंगिक समस्याओं का समुचित विवेचन, समाजीकरण पर यथेष्ठ वल, समुचित रूप से प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की नियुक्ति, बाल निर्देशन ग्रह आदि से जो सामान्य जनजीवन समुन्नत होता है, उसमे पर्यावरण में वांछित सुधार आ सकता है और तदनुसार बाल एवं किशोर अपराध में भी कमी हो सकती है।

**पुलिस का भय**

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरों के आँकड़े यही कह रहे है कि देश में किशोर अपराधों की स्थिति भयावह होती जा रही है। बाल एवं किशोर अपराध पर नियंत्रण पाने के लिए पुलिस के भी कुछ कार्य है।

1. पहला यह है पेट्रोलिंग अर्थात गश्त। बाल अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए यह कारगर होती है।
2. दूसरा है पुलिस पिकेटिंग यानी सड़कों या अन्य क्षेत्रों में पुलिस कर्मियों की मौजूदगी सुनिस्रित हो। इससे बाल अपराधों में कड़ा संदेश जाता है और उनका मनोवल कम हो जाता है।
3. तीसरा है सर्विसलांस। इसमें किशोर अपराधियों पर कड़ी नजर रखी जाती है।

आज आवश्यकता इसकी भी है कि पुलिस नेतृत्व, अधीनस्थ कर्मचारियो को समयबद्ध लक्ष्य दें और उसे पूरा करने में उनका मार्गदर्शन और सहयोग करे।

**मीडिया की भूमिका**

इसके अतिरिक्त मीडिया के भी शिक्षण की जरूरत है जिस तरह की चीजें विभिन्न मीडिया माध्यम से परोस रहे हैं उसके प्रति उन्हें आगाह करने का वक्त आ गया है इसके लिए मीडिया संगठनों को चार-छह माह में नियमित तौर पर रिव्यू या वर्कशाप जैसा कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए। इस तरह का आदेश सूचना-प्रसारण मंत्रालय या अन्य मीडिया संगठन दे सकते हैं। इसी क्रम में मीडिया नीतिशास्त्र का पेपर मीडिया कोर्स का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

भारत में 6 से 15 वर्ष आयु समूह में करीब 28 करोड़ बच्चे हैं। उनका मानसिक विकास सही तरह से हो और वे देश की आवश्यकतानुरूप विकसित हों, यह चिंता सभी को करनी चाहिए।

**कानून का भय**

किशोरों द्वारा किये जाने वाले जघन्य अपराधों (दुष्कर्म) में अभियुक्त की उम्र 18 वर्ष से घटाकर 16 वर्ष की गई थी। पॉक्सों अधिनियम में पहले ही सख्ती की जा चुकी है। दुष्कर्म दंडनीय ही नहीं होते वरन् वे समाज के लिए पीड़ादायक भी होते हैं। वे राष्ट्र के लिए शर्म और गहन व्यथा का विषय भी होते है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के बाहर लंदन में भी इन घटनाओं को लज्जानक बताया। वह देश लौटे उसी दिन मंत्रीपरिषद बैठी जिसने क्रिमनल लॉ (संसोधन) अध्यादेश पर सर्वसम्मति से सहमति दी। राष्ट्रपति ने भी इस अध्यादेश को मंजूरी दे दी है। अध्यादेश में 12 वर्ष तक की बच्चियों के साथ दुष्कर्म करने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान है। कानून का कठोर होना अच्छी बात है। कानून का भय और भी अच्छी बात है लेकिन समाज का मूकदर्शक हो जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। आधुनिक बाजार संचालित समाज में मुनाफा और उपयोगिता ही स्वर्णसूत्र है। वरिष्ठ, वृद्व, आचार्य और माता-पिता अनुपयोगी है।

**उचित सामाजीकरण**

बाल एवं किशोरों का सामाजीकरण उचित ढंग से होना चाहिए प्रामाणिक किशोर युवा का निर्माण माता-पिता, आचार्य, नेता और समाज का दायित्व है। जघन्य अपराधों में वृद्वि कोई भी सरकार बर्दाश्त नहीं करती है। किशोर अपराध वृद्वि के अनेकानेक कारण होते है। इसलिए अपने सदस्यों को उच्चतर जीवन आदर्श देना समाज की ही जिम्मेदारी है लेकिन समाज तटस्थ है। भारत का मन कभी भी हिंसक नहीं रहा, लेकिन पिछले दो दशक से यहाँ किशोर अपराध एवं तनाव का वातावरण रहा है। बच्चे टीवी के भरोसे है। आचार्य, माता-पिता, धर्मगुरू, सामाजिक कार्यकर्ता आगे आये। सामाजिक मर्यादा का भय होगा तभी कानून का भय होगा।

**निष्कर्ष**

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि बाल और किशोर अपराध निरोध तथा नियंत्रण विषयक सभी पक्षों के सम्बन्ध में स्वस्थ सार्वजनिक नीति के लिये नियोजन तथा आनुभविक विधि द्वारा मूल्यांकन दोनों की आवश्यकता हैं। इसके लिये सरकारी एजेन्सियों (जैसे समाज-कल्याण विभाग), शैक्षिक संस्थाओं, पुलिस, न्याय-पालिका, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं तथा स्वैच्छिक संगठनों के बीच समजंस्य की आवश्यकता है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *सिंह श्यामधर- अपराधशास्त्र के सिद्वान्त, सपना अशोक प्रकाशन वाराणसी, 2008.*
2. *सिंह श्यामधर एवं सिहं मीरा- सामाजिक समस्याओं का समाजशास्त्र, सपना अशोक प्रकाशन, रामनगर, वाराणसी, 2011.*
3. *महाजन धर्मवीर एवं महाजन कमलेश- समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, 2015.*
4. *राष्ट्रीय अपराध ब्यूरों- गृह मंत्रालय, भारत सरकार, 2021.*
5. *आहूजा राम एवं आहूजा मुकेश - विवेचनात्मक अपराधशास्त्र, रावत पब्लिकेशन जयपुर।*
6. *आहूजा राम- भारत में सामाजिक समस्या, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 1992.*
7. *मानव अधिकार आयोग नयी दिल्ली 2020.*

SSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

# संथाल समाज में बारह मास में तेरह त्योहार

# Santals Celebrate Thirteen Festival in Twelve Months

Paper Id.:15573, Submission Date: 10/01/2022, Acceptance Date: 20/01/2022, Publication Date: 22/01/2022

**बुद्धदेव बिस्वास**
अनुसंधान विद्वान,
संताली और ग्रामीण प्रबंधन
विश्व-भारती,
शांति निकेतन
पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

**" बंगाली"** का अर्थ है बारह महीनों में तेरह त्यौहार। इसी प्रकार, आदिवासी समुदाय के संथाल समाज में बारह मास में तेरह पर्व मनाए जाते हैं। यद्यपि संथाल समाज में विभिन्न प्रकार के त्यौहार हैं, वे धर्म और परिवार पर आधारित हैं। संथाल लोग प्रत्येक त्योहार का आनंद लेते हैं। आजकल, आधुनिक सार्वजनिक जीवन में संथाल त्योहार बहुत बदल गए हैं। संथाल समुदाय कृषि उत्पादन प्रणाली और संस्कृति के धारक के रूप में पहचाने जाने वाले भारतीय उप-महाद्वीप के पहले स्वदेशी लोगों में से एक है। संथालों के प्रमुख देवता सूर्य हैं , जिनको ये लोग -"**सिंह बोंगा** " नाम से बोलते हैं। वे अपने सभी देवताओं को **"बोंगा"** कहते हैं। वे प्राकृतिक तत्वों- पेड, पत्थर को देवता मानते हैं। संथाल समुदाय मूर्ति पूजा का उपयोग नहीं करता है, क्योंकि वे विभिन्न प्राकृतिक वस्तुओं को देवता मानते हैं।

**"Bengali"** means thirteen festivals in twelve months. Similarly, thirteen festivals are celebrated in twelve months in the Santhal community of the tribal community. Although there are different types of festivals in the Santhal society, they are based on religion and family. Santhal people enjoy each and every festival. Nowadays, Santhal festivals have changed a lot in modern public life. The Santhal community is one of the first indigenous people of the Indian sub-continent to be recognized as the holder of an agricultural production system and culture. The main Gods of the Santhals is Surya, whom these people call by the name **"Singh Banga"**. They call all their Gods as **"Bonga"**. They consider natural elements - trees, stones as gods. The Santhal community does not use idol worship, as they consider various natural objects to be gods

**मुख्य शब्द:** आदिवासी, संताल, संस्कृति, बहा, दनसाई, सोहोरई
**Keywords:** Tribal, Santals, Culture, Baha, Dansai, Sohorai

**प्रस्तावना**

संथाल समुदाय बहुत उत्सव प्रिय है । बंगालियों की तरह, इनमे भी बारह महीनों में तेरह त्योहार देखे जाते हैं, लेकिन बंगालियों की तरह, बैशाख के महीने में वर्ष शुरू नही होता है। वर्ष की शुरुआत माघ माह और अंत पौष माह से होती है। माघ महीने से शुरू होकर संथाल लोग साल भर विभिन्न सामाजिक और धार्मिक समारोहों में शामिल होते हैं। संथाल समाज मे **"आखरा"** शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसमे ये लोग अनेक तरह से नृत्य करते हैं और गाते हैं। महिलाएं प्राकृतिक तत्व पहनती हैं जैसे कि आभूषण के रूप में। वे खुद को सजाते हैं। संथाल समाज में लोक परंपरा का प्रभाव ज्यादा है इसलिए काव्य, गान, इत्यादि का प्रचलन है।संथाल लोगों की एक विशेषता यह है कि कृत्रिम उपकरणों का उपयोग किए बिना, **"तुमदा- टामाक"** अर्थात धामसा मदल का उपयोग करने के अधिक आदी हैं।यद्यपि वर्तमान में कृत्रिम संगीत वाद्ययंत्रों की प्रधानता देखी जाती है।

यानी माघ महीने के पहले दिन त्योहार शुरू होता है जिसे बंगाली नव वर्ष कहते हैं। माघ महीने की पूर्णिमा के दिन तक ये उत्सव किया जाता है। इस समय पर मुर्गी खाई जाती है, इसीलिए इस उत्सव को **"माघ सीम"** कहते हैं।सीम का अर्थ है मुर्गी। ये पूजा न होने तक कोई भी शिकार करना, पत्ते तोड़ना, जंगल मे जाना मना होता है। कोई भी शुभ काम नही किया जाता है। समाज के पुजारी को नायके कहा जाता है। जो संपूर्ण पूजा का दायित्व लेता है।ये पूजा अधिकतम् खेत मे की जाती है। जंगल, पहाड़, गाय, नदी, गाँव की सीमा, इत्यादि के नाम पर पूजा की जाती है।

इस पूजा में यह खिचड़ी बनाई जाती है। यह खिचड़ी गांव के सभी लोगों द्वारा बांटी जाती है ताकि वे पकी हुई खिचड़ी को एक साथ यह सोचकर खा सकें कि उनमें एकता बनी रह सकती है।

माघ मास के बाद फाल्गुन मास की संथाल जाति में **"बाहा"** पूजा की जाती है। यह पूजा पूर्णिमा के दिन की जाती है। संथाल समाज में इस पूजा का बहुत महत्व है। ऐसा कहा जाता है कि पूजा के अंत तक संथाल लड़कियों को अपने सिर पर कोई फूल लगाने की अनुमति नहीं है। इस पूजा को **"बाहा बांगा"** कहा जाता है। बाहा यानी फूल, अर्थात् फाल्गुन के महीने मे आसपास नए फूल

खिलते हैं। इसलिए पूजा का नाम बाहा है। इस पूजा तक बालों में फूलों का प्रयोग नहीं किया जा सकता, महुआ का रस नहीं पिया जा सकता, नई सब्जियां नहीं खाई जा सकतीं। जैसा कि बंगाली समाज में कहा जाता है कि सरस्वती पूजा तक कोई बेर या फल खाना मना है। यह पूजा तीन दिनों तक चलती है। संथाल समाज में कोई मंदिर नहीं है।उनके पूजा स्थल को **"जाहेर थान"** कहते हैं। डाल और पत्तों से बना है ये **"जाहेर थान"**। जहां संथाल समाज में विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं की पूजा की जाती है, जैसे- **"जाहेर एरा", मरांगबुरु, "गोसाई", "मोर का तुरुया को"** आदि। यह **"जाहेर थान"**पूर्व-पश्चिम दिशा में बनाया जाता है। इस काल मे संथाल **"तुमदा- टामाक"**यानी धमसा मादल के साथ नाचते-गाते हैं। इस पूजा के अंत में गांव के लड़के जंगल में जाते हैं, और जानवर का शिकार करते हैं, और उसे लाते हैं, और उस जानवर के मांस के साथ खिचड़ी पकाने के बाद सभी उसे खाते हैं।

फाल्गुन मास के बाद बैशाख मास आता है, इस मास में **"मा:मोरे"** पूजा की जाती है।पूजा का प्रकार पहले वर्णित **"बाहा बांगा"**के अनुसार है।**"मोरे"** का मतलब [5], यह पूजा पांच वर्षों बाद-बाद की जाती है, इसलिए इस पूजा का नाम **"मा:मोरे"**। अन्य पूजाओं की तरह इस पूजा को भी **"तुमदा-टामाक"** अर्थात् धामसा मादल पर बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। संथाल समाज में शराब का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, इसे संथाली भाषा में **"हांडि"** कहा जाता है। जिसका उपयोग वे अपनी पूजा में करते हैं। पूजा इस**"हांडि"** के बिना पूरी नहीं होती है।

फिर आषाढ़ मास में **"एर:सीम"** की जाती है। यह पूजा इसलिए की जाती है ताकि कोई भी बीमारी बाहर से गांव में प्रवेश न करे। यह पूजा अन्य पूजाओं की तुलना में बहुत छोटी होती है।

आषाढ़ मास के बाद श्रावण मास में संथाल जाती की **"हरीयार सीम"** पूजा करते हैं। यह पूजा पहले वर्णित "माघसीम" पूजा के समान है। इस पूजा के पूरा होने तक बकरियों या गायों के लिए घास काटने की अनुमति नहीं है। पूजा संपन्न होने के बाद पालतु जानवरों के लिए घास काटी जा सकती है। अश्विन के महीने में बंगालियों का सबसे बड़ा त्योहार है दुर्गा पूजा। संथाल समुदाय के लिए भी यह महीना एक महत्वपूर्ण **"दांशाय़ त्योहार"** है। बंगाली साहित्य की पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी ठकुरन हिमालय से भूमी पर अवतरित होती हैं। इस समय देवी दुर्गा की पूजा की जाती है।

इस समय़ संथाल लड़के **"दांशाय़ दांरान"** के लिए जाते हैं। इसका कारण यह है कि भारतीयशत्रु अतीत में अपना राज्य स्थापित नहीं कर सके। संथालों के साथ अपना राज्य स्थापित करने के लिए युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में संथाल के लड़के-लड़कियां सभी शामिल थे। लड़कियों में दो बहादुर लड़कियों **"आयोनाम और काजल"** थीं। दुश्मनों ने सोचा कि इन दो बहादुर लड़कियों का अपहरण किए बिना उनके लिए युद्ध जीतना असंभव होगा, इसलिए उन्होंने इन दोनों लड़कियों का अपहरण कर लिया। संथाल लोग इन दोनों लड़कियों को खोजने निकल पड़े। इस समय लड़के लड़कियों का रूप धारण कर लेते हैं, और घर-घर जाते हैं। चलते-चलते वे अपना नृत्य गाते हैं और उनके पास धनुष-बाण छिपे होते हैं। बंधी अपने अपहृत **"आयोनाम और काजल"** को देखेंगे तो धनुष-बाण से युद्ध करके उन्हें वापस ले आएंगे। उनके गीत की शुरुआत में **"हाय-हाय"** शब्द होता है क्योंकि यह एक दुखद गीत है। इसलिए वे गीत की शुरुआत**"हाय-हाय"** हैं। जैसा-

**"हायरे हायरे हायरे हायरे.....**
**देलांग देलांग गुरू हो ..... देलांग बेरेत में**
**देलांग देलांग चेला हो..... देलांग साजो: मे**
**दिशोम दांरान गुरू को ओडोक एना हो.....**
**दिशोमसांघार चेला को बाहेर एना हो.....".**

इस त्यौहार में उनके गुरु-शिष्य हैं, उनकी बातों को इस गीत के माध्यम से उजागर किया गया है। इस समय लड़के सफेद धोती, सिर पर पगड़ी और मोर पंख पहनते हैं। पैरों पर झुमुरा और हाथों पर कांस्य और करताल रखते हैं। संथल साहित्य के अनुसार बारह गुरु होते हैं।

आश्विन मास के बाद कार्तिक मास में संथालों का सबसे बड़ा पर्व **"सोहराय"** मनाया जाता है, यद्यपि क्षेत्र समय क्षेत्र के साथ बदलता रहता है। कहीं यह कार्तिक मास में होता है तो कहीं पौष मास के अंत में। यह त्योहार पांच दिन और पांच रातों तक चलता है। लंबे समय तक चलने के कारण, त्योहार को **"हाथी लेकन सहराय"** कहा जाता है। हाथी ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि ये लम्बे समय तक होता है। इस कड़ी का उद्देश्य मवेशियों को प्राथमिकता देना है। निर्धारित दिन पर, सभी ग्रामीण अपनी गायों को निर्धारित स्थान पर ले जाते हैं और निर्धारित तरीके से सेवा पूजा करते हैं।इस समय घर की बहू-बेटा अपने घर लौट आती है। इस समय सभी लड़के-लड़कियां पांच दिन और पांच रातों तक गली में नाच-गाते हैं। इन पांचों दिनों का एक विशेष नाम है। जैसे पहला दिन- **"उमास माहा",** दूसरे दिन- **"सारदी माहा",** तीसरा दिन- **"खुंटओ माहा",** चौथा दिनऔर पाँचवाँ दिन- **"जाले"** आर **"जाजेले"**। बंगालियों के लिए इस त्योहार को**"बादना"** के नाम से भी जाना जाता है।

संताल समाज मे बंगालियों की तरह, साल भर अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।अलग-अलग कार्यक्रमों के लिए अलग-अलग रीति-रिवाज हैं। अलग-अलग पूजा के लिए अलग-अलग मंत्र, गीतों का वर्णन किया गया है। अलग-अलग देवता के लिए अलग-अलग का उपयोग किया जाता है। यह मंत्र "बाखेर" कहते हैं।हालांकि मौजूदा बदलते हालात में उनके समाज का रूप बदलता जा रहा है। कई लोग अपने जैसे छोटे-छोटे त्योहार मनाते हैं।

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. संताल संस्कृति को जानने के लिए।
2. संताल समाज में पूजा के तत्वों को जानना।
3. यह जानने के लिए कि ये संस्कृतियां क्यों महत्वपूर्ण हैं।

**निष्कर्ष**

संथाल समुदाय बहुत उत्सव प्रिय है । बंगालियों की तरह, इनमे भी बारह महीनों में तेरह त्योहार देखे जाते हैं, लेकिन बंगालियों की तरह, बैशाख के महीने में वर्ष शुरू नही होता है। वर्ष की शुरुआत माघ माह और अंत पौष माह से होती है। माघ महीने से शुरू होकर संथाल लोग साल भर विभिन्न सामाजिक और धार्मिक समारोहों में शामिल होते हैं। संथाल समाज मे **"आखरा"** शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसमे ये लोग अनेक तरह से नृत्य करते हैं और गाते हैं। महिलाएं प्राकृतिक तत्व पहनती हैं जैसे कि आभूषण के रूप में। वे खुद को सजाते हैं। संथाल समाज में लोक परंपरा का प्रभाव ज्यादा है इसलिए काव्य, गान, इत्यादी का प्रचलन है।संथाल लोगों की एक विशेषता यह है कि कृत्रिम उपकरणों का उपयोग किए बिना, **"तुमदा- टामाक"** अर्थात धामसा मदल का उपयोग करने के अधिक आदी हैं। यद्यपि वर्तमान में कृत्रिम संगीत वाद्ययंत्रों की प्रधानता देखी जाती है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *Murmu, Rameswar. (2012), JaherBongaSantarhKa; Adim Publication, Kolkata*
2. *Hembram , Parimal (2015), Santali Sahitya Itihas, Nirmal Book Agency, Kolkata*
3. *Hansda, Rupchand (2008), More Sin More Nida, Kherwar Publication, Howrah.*
4. *Hansda, Rupchand (2006), Hihiri Pipiri, Kherwar Publication, Howrah.*
5. *Murmur, Lakhan Chandra, (2014), History of Santali Literature, pashchima Publications, Odisha.*
6. *Kerkatta, Sudhil, (2016), Primitive Tribes of Jharkhand, Ke Ke Publication, Allahabad*

# चिन्ता पर योग का प्रभाव एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन

# Effect of Yoga on Anxiety A Psychological Study

Paper id: 15641 Submission: 11/01/2022, Date of Acceptance: 21/01/2022, Date of Publication: 23/01/2022

**सबीहा परवीन**
एसोसिएट प्रोफेसर,
मनोविज्ञान विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामपुर,
उ0 प्र0, भारत

## Abstract

यह शोध पत्र लड़के और लड़कियो मे चिन्ता पर योग का प्रभाव का अध्ययन से सम्बन्धित है इस अध्ययन में दो समुह लिये गये है। एक समुह जो योग करने से सम्बन्धित है इसमें 10 लड़के और लड़कियो को लिया है दूसरा वह समुह जो योग नही करता है इसमें भी 10 लड़के और 10 लड़कियों का कुल प्रतिदर्श है इस अध्ययन में चिन्ता पर योग का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला।

This research paper is related to the study of the effect of yoga on anxiety in boys and girls, two groups have been taken in this study. One group that is related to doing yoga has taken 10 boys and girls, the other group that does not do yoga also has a total sample of 10 boys and 10 girls. This study found a positive effect of yoga on anxiety.

**मुख्य शब्दः** स्वस्थ शरीर की महत्ता, योग का विज्ञान से सम्बन्ध, योग का स्वास्थय पर प्रभाव और योग अभ्यास के अर्न्गगत किय गये आसनो के लाभ, योग से मानसिक स्थिति मे परिवर्तन, और चिन्ता को प्रभावित करने वाले कारक

**Keywords:** Importance of Healthy Body, Relation of Yoga With Science, Effect of Yoga On Health and Benefits of Asanas Done Under Yoga Practice, Change In Mental State With Yoga, And Factors Affecting Anxiety.

**प्रस्तावना**

मनुष्य कारीर जन्म से लेकर मृत्यु तक क्रियाशील रहता है। कोई भी वस्तु जड़ हो या चेतन, निरन्तर क्रियाशील रहने के कारण उसमें हास होना स्वाभाविक है। इसी हास होने के कारण नाना प्रकार की व्याधियां और दुर्बलताएं मनुष्य को घरे लेती है। यौवन-काल के समान उसमें शक्ति उमंग और उत्साह नही रह जाता है। क्रमशः समय के साथ, बढ़ती आयु के कारण वह कमजोर होता जाता है।

मनुष्य की इसी क्षमता को बनाये रखने के लिये व्यायाम, आसन आदि बनाये गये है। इनके करते रहने से शरीर की विभिन्न पेशियां, अंग, हडिडया बराबर क्रियाशील रहते है। प्रत्येक व्यायाम, आसन का अपना अलग-अलग प्रभाव होता है। शरीर के अंग विशेष या पेशियो पर उनका प्रभाव पड़ता है। उनकी क्षमता बनी रहती है।

"कुछ योगाचार्य का मानना है और वास्तव में देखा गया है कि योगासन के द्वारा गलित कुष्ठ, कैंसर और राजयक्षमा (टी0बी0) जैसे असाध्य व प्राण घातक रोग भी ठीक हुये है, और ठीक किये जा सकते है।"

वर्तमान समय में योग की प्रांसगिकता को बदलते समय के साथ एक नया मोड़ मिला है। आज के समय मे योग कुछ विशेष व्यक्तियों तक ही सीमित नही बल्कि अधिकतर लोगो का रूचि का विषय बन गया है। यह सामान्य व्यक्ति के दैनिक जीवन मे उपयोगी समझा जाने लगा है। योग मनुष्य जीवन को संतुष्ट सम्बन्धित और सन्तुलित बनाता है इसका लक्ष्य व्यक्तित्व और इसकी कार्य प्रणाली जिसमें मस्तिष्क भी सम्मिलित है, का विकास करना है स्वस्थ रहने के लिये उपयोगी तो है ही यह आलसी लोगों को चुस्त दुरूस्त बनाता है और व्यस्त लोगों को आराम पहुचाता है, शारीरिक या मानसिक तनाव को कम करता है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

लड़के तथा लड़कियो में चिन्ता पर योग का प्रभाव।

**साहित्यावलोकन**

योग का अनुपम प्रभाव ने विश्व भर के शरीर वैज्ञानिको का ध्यान आकर्षित किया है। स्वामी रामदेव जी महाराज के भागीरथ प्रयासो जैसे योग को पंख ही लगा दिए है इसके द्वारा दिये गये योग के परिणामो से योग के प्रति वैज्ञानिकों का प्रारंभिक संकोचपर्ण उदासीन रवैया आज उत्सुकता एवं जिज्ञासा में भर गया है। रोगोपचार के साथ-साथ परिवारिक और सामाजिक जीवन में प्राप्त हो रहे योग आश्चर्यजनक परिणामो ने शरीर वैज्ञानिकों और मनोवैज्ञानिकों को योग की वैज्ञानिक आख्या का मूल्यांकन करने के लिये लगभग बाध्य ही कर दिया है।

बींसवी सदी को पूर्वाध में स्वामी कुवलयानन्द और उनके शिष्य के0 टी0 बेधनान ने योग क्रियाओं के विकिरणात्मक प्रभावों एवं योग आधारित नियंत्रित ऐच्छिक श्वास क्रियाओं (प्राणायाम)

के बीच में ऑक्सीजन के उपयोग पर व्यवस्थित अध्ययन किया। बाद में शोधकर्ताओं सत्यनारायण तथा शास्त्री 1958 बैगर आनन्द एवं छिन्या 1961 योग विशेयक ने अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किये।

'अन्सारी' ने अपने एक अध्ययन में पाया कि स्कूल के विद्यार्थियो और कॉलेज के विद्यार्थियो की चिन्ता में महत्वपूर्ण और सार्थक अन्तर होता है एक अध्ययन में यह सिद्व हुआ कि आयु का चिन्ता से सार्थक सम्बन्ध नही है अनेक अध्ययनों से स्पष्ट हुआ कि लड़के एवं लड़कियो की चिन्ता के स्तर से महत्वपूर्ण अन्तर होता है लड़को की अपेक्षा लड़कियो मे चिन्ता का स्तर अधिक होती है।

'शर्मा' 1970 ने एक अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला कि जिन छात्रों में चिन्ता की मात्रा उच्च अथवा निम्न थी इन छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर मध्यम होता है।

अनेक अध्ययनो (Spence, Mendelson, Kieffer, Tennyson) में यह देखा गया कि Task Quiented स्थितियो मे उच्च चिन्ता वाले प्रयोज्यो का निष्पादन अच्दा होता है। साधारणता कम चिन्ता वाले प्रयोज्यो की अपेक्षा अधिक होता हैं।

'पाउलसन- 1972 में एक अध्ययन में देखा कि अधिक चिन्ता की अवस्था में वातावरण के उददीपको पर ध्यान केन्द्रित करने में प्रयोज्म को कठिनाई होती है।

एक अध्ययन में यह देखा गया कि उच्च चिन्ता जटिल कार्यो मे निष्पादन का निर्धारण करती है एक अन्य अध्ययन में सिन्हा 1960 ने यह पाया कि निम्न चिन्ता वाले व्यक्तियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च चिन्ता वाले व्यक्तियो की अपेक्षा अधिक होती है।

**योग से मानसिक स्थिति में परिवर्तन**

आधुनिक जीवन को भाग दौड़ व तनाव के चलते जिन लोगो की स्मरण शक्ति प्रभावित हो चुकी है उन्हे भी योग की शरण में आकर फिर से अपने आपको ऊर्जावान करने का अवसर मिलता है। योग प्रणायाम से तनाव के स्तर पर विशेष लाभ होता है सर्वेक्षण के दौरान मानसिक स्थिति को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित परिणाम देखने को मिले। योगासन से मन शांति का अनुभव करता है इस कारण मानसिक शक्ति बढ़ती है और वृद्वि का विकास होता है योगासन के महत्वपूर्ण लाभ है।

1. 'ज्ञान मुद्रा आसन' के अन्तर्गत मानसिक शांति, एकाग्रता, का विकास विचारो को जोड़ने का विकास होता है।
2. 'सिद्वासन' का वास्तविक लाभ मानसिक है इसमें ध्यान लगाने से मानसिक शांति मिलती है दृष्टि तीक्ष्ण होती है त्राटक बिन्दु में प्रकाश करता हैं।
3. 'शसाकासन' करने से हृदय, फेफड़े और सांस के विकार दूर होते है। इस आसन में ध्यान लगाने से मन शान्त होता है और क्रोध पर नियंत्रण होता है बृद्वि विकसित होती है।
4. 'सुखासन' इस आसन से थकावट नही होती है मेरूदण्ड मे लचीलापन आता है।
5. उष्टासन तथा सर्वागासन से शरीर मे रीढ़ की हडडी व उंगलियां लचीली व मजबूत बनती है। मानसिक शक्ति बढ़ती है कब्ज या बदहजमी आदि दोष दूर होते है पीठ, कमर, कंधो की पेशियां मजबूत एंव लचीली होती है, हृदय फेफड़े आदि भी मजबूत होते है।

'चिन्ता' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द (Anxiety) से हुई है जिसका अर्थ है Experience of Varying blendo of ineertainly agitation and treat मनोविज्ञान मे इस शब्द को सर्वप्रथम लाने का श्रेय 'फ्रायड' 1894 को है। इनका विचार था शारीरिक यौन तनाव के दमन के परिणाम स्वरूप चिन्ता की उत्पत्ति होती है। अनेक मनोवैज्ञानिकों ने चिन्ता को अलग अलग परिभाषित किया है।

'मे' 1950 के अनुसार "भय के संकेत की अनुभूति की कोई मात्रा जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के लिए आवश्यक समझता है चिन्ता कहलाती है।

'सुलीवन' चिन्ता तनाव की वह अवस्था है जो अन्तः वैयक्तिक सम्बन्धों के अनुभवों से उत्पन्न होती है।

'स्पाइल बरगर' के अनुसार चिन्ता उदोलन की वह अवस्था है जो भय से बचने के कारण उत्पन्न होती है।

मनोविज्ञान के अर्न्तगत चिन्ता दो प्रकार की होती है।

**Trait Anxiety**

प्रकार की चिन्ता व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक शील गुण है 'कैटेल' ने इस प्रकार की चिन्ता का वर्णन (Second order personality factors) के द्वारा किया कि जिस व्यक्ति में इस प्रकार की चिन्ता अधिक मात्रा में होती है। वह कम खतरनाक परिस्थिति को भी अधिक खतरनाक परिस्थितिके रूप मे प्रत्यक्षिकृत करते है यह चिन्ता अपेक्षाकृत स्थायी होती है।

**State Anxiety**

**State Anxiety**^ स्पाइल बरगर' के अनुसार चिन्तामक अवस्था से तात्पर्य आत्मगत एंव चेतन रूप से प्रम्यक्षीकरण की गई इस तनाव एवं आशका की भावना से है जो स्वचलित नाडी मण्डल (ANS) के सक्रिय होने से सम्बन्धित होती है।
चिन्ता को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते है जैसें सामाजिक आर्थिक स्तर, शहरी एवं ग्रामीण जीवन, कुण्ठा, संवेगात्मक, परिवारिक वातावरण, विद्यालय का वातावरण, सैंक्स, व्यक्ति का स्वास्थ्य, बुद्धि,, आत्मप्रत्यय, हीनता की भावना, शैक्षिक उपलब्धि आदि।

**परिकल्पना**

1. "योग करने वाले तथा योग न करने वाले व्यक्तियो मे चिन्ता कीमात्रा मे सार्थक अन्तर नही पाया
2. जाताहै।"
3. "लड़कों तथा लड़कियो में चिन्ता की मात्रा मे सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।"
4. "योग करने वाले लड़के तथा लड़कियों की अपेक्षा न करने वाले लड़के तथा लड़कियों में चिन्ता की मात्रा में सार्थक अन्तर पायाजाता है"

**क्रियाविधि**

सिन्हा एण्ड सिन्हा द्वारा बनाये गये प्रपत्र के माध्यम से प्रयोज्यो से 'हां' और 'नही' मे उत्तर लिये गये।

**न्यादर्ष**

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन 40 प्रयोज्यों पर किया गया है जिसमें दो समूह है प्रत्येक समूह में 10 लड़के तथा 10 लड़कियाँ है। एक समूह के व्यक्ति जो योग करते है तथा दूसरे समूह के व्यक्ति जो योग नही करते है, सभी की आयु लगभग समान है।

**प्रयुक्त उपकरण**

A. K. P. सिन्हा एवं L. M. K. सिन्हा पटना SCAT (Hindi Version)द्वारा निर्मित चिन्ता मापनी द्वारा प्रयोज्यो से data लिया इस प्रपत्र में 90 प्रश्न है।

**अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी**

| उपसमुह | योग करने वाले व्यक्ति | योग न करने वाले व्यक्ति |
|---|---|---|
| छात्र | 36,30,40,44,47,39,30,41,38,30 | 50,49,52,56,51,60,47,48,55,59 |
| छात्रायें | 47,45,50,40,48,58,39,48,55,52 | 56,58,61,65,59,50,49,56,61,62 |

**तालिका तथा गणना विधि**
**सभी प्राप्तांक समुह का योग**

| उपसमुह | योग करने वाले | योग नही करने वाले | योग |
|---|---|---|---|
| छात्र | 375 | 527 | 902 |
| छात्रायें | 476 | 577 | 1053 |
| योग | 851 | 1104 | 1955 |

**Analysis of Variance**

| Source of Variation | d.f | Sum of Squares | MS | F-Ratio | Leval of Significant |
|---|---|---|---|---|---|
| SSA | 1 | 570.03 | 570.0. | 0.00 | |
| SSB | 1 | 1600.23 | 1600.23 | 0.00 | P>.01,0.5 |
| SSAB | 1 | 45320.04 | 45320.04 | 0.02 | |
| SSwithin | 36 | 44564.93 | 1604337.48 | | |
| Total | 39 | | | | |

**परिणाम**

प्रस्तुत अध्ययन में प्रत्येक समुह से चिन्ता मापनी प्रपत्र हल करवायें और स्कोर प्रदान किये। तत्पश्चात् उनका 'प्रसारण विश्लेषण' या Analysis of Variance ज्ञात किया। अपनी तीनो उपकल्पनाओं की जांच हेतु Anova का प्रयोग करके अर्थात इसके अर्न्तगत 'द्वि-दिश प्रसारण-विश्लेषण का प्रयोग करके SSA=570.03 तथा SSB=1600.22 तथा SSAB=45320.04 तथा SS within= 44564.93 किया तथा Degree of Freedom =39 प्राप्त किया। जिसकी सहायता से Summary Table बनाई। योग करने वाले लड़को का मध्यमान 37.5 तथा योग न करने वाले लड़को का मध्यमान 52.7 तथा योग करने वाली लड़कियों का मध्यमान 47.6 तथा योग न करने वाली लड़कियो का मध्यमान 57.7 तथा योग करने वाली लड़कियों का मध्यमान 47.6 तथा योग न करने वाली लड़कियो का मध्यमान 57.7 है।

इसी प्रकार योग करने वाले लड़कों तथा लड़कियों की अपेक्षा योग नहीं करने वाले लड़के तथा लड़किया में चिन्ता की मात्रा अधिक पायी जाती है। इस कारण बनाई गई तीनों शून्य उपकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

"आपरेशनल रिसर्च में एटीग्रल स्वास्थय क्लीनिक (आईएचसी) में किये गये एक अध्ययन में यह देखा गया है कि व्यक्तियों का मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य योग न करने वाले तथा योग करने वाले व्यक्तियो की अपेक्षा अत्याधिक प्रभावशाली होता है तथा योग करने वाले व्यक्तियों में चिन्ता, तनाव, आत्मकता आदि योग न करने वालो की अपेक्षा कम पायी जाता है।

मार्च एवं जून 2004 में एक क्रमबद्व पुनरीक्षा की गई जिसके द्वारा चिन्ता और चित्त के रोगो पर योग के प्रभाव का अध्ययन किया गया। आठ अध्ययनों की पुनरीक्षा की गई कई अयोग्यताओं के होने के बाद भी इसके निष्कर्ष सकारात्मक निकले।

नई दिल्ली आई टी0 आई0 दिल्ली के एक अकादीमक केन्द्र नेशनल रिसोर्स सेंटर फार वैल्यू इन इंजीनियरिंग (एनआरसीवीईई) के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा जिसमें डॉ0 पूजा साहनी, नीतेश, डॉ0 कमलेश सिंह व एनआरसीवीईई प्रमुख प्रो0 राहुल गर्ग शामिल है एक शोध किया गया शोध के दौरान डॉ0 पूजा साहनी ने 668 व्यस्क लोगों पर कोविड -19 के दौरान अप्रैल 26 से लेकर 28 जून 2020 तक अध्ययन किया। शोध के दौरान लोगो को योग अनुयासकर्ता और अन्य में बांटा गया था जो लोग योग नहीं करते थे उनका आंकलन उनके दैनिक अन्य अभ्यासो के माध्यम से किया गया। योग अभ्यास करने वाले लोगो में लम्बे समय तक योग करने वाले कम अवधि तक योग करने वाले व शुरूआत करने वाले शामिल रहै।

डॉ0 पूजा ने बताया कि अध्ययन मे यह सामने आया कि योग एवं प्रबंधन रणनीति मे सबसे प्रभावी है इससे तनाव, चिन्ता एवं अवसाद से बचा जा सकता है वही राहुल गर्ग ने बताया कि योग जीवन की विभिन्न चुनोतियों से लड़ने में हमारी मदद करता है।

आगे ठीक प्रकार से संचलित अध्ययन की जरूरत है जो ज्यादा उत्पादक होगी यदि वह विशेष रूप से चिन्ता के रोगों पर केन्द्रित हो।

**निष्कर्ष**

आगे ठीक प्रकार से संचलित अध्ययन की जरूरत है जो ज्यादा उत्पादक होगी यदि वह विशेष प्रकार चिन्ता के रोगो पर केन्द्रित हो।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *अरूण कुमार सिंह, विभागाध्यक्ष, स्नाकोत्तर मनोविज्ञान विभाग पटना विश्वविद्यालय, पटना-800005*
2. *डॉ0 एच0 के कपिल-संख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर*
3. *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में संख्यिकी के मूल आधार-लाभ सिंह, द्वारका प्रसाद, महेश भार्गव, तथा तारेष भाटिया।*
4. *योगासन तथा प्राणायाम-आचार्य कृपा सिंह।*
5. *योग विद्या-बाबा रामदेव, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)*
   *https://www.artofliving.org.yoga*
6. *https://www.punjabkesri.in.news*

SSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

# राजस्थानी-पगड़ी कला
# Rajasthani-Turban Art

Paper Id.: 15614, Submission Date:05/01/2022, Acceptance Date: 17/01/2022, Publication Date: 20/01/2022

**लक्ष्मी कान्त शर्मा**
असिस्टेंट प्रोफेसर & गेस्ट फैकल्टी,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर, राजस्थान, भारत

## सारांश

सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति अतुलनीय व प्रशंसनीय है। जिसके अन्तर्गत अनेक तत्वों का समावेश है। इन तत्वों में परिधान (वेशभूषा) का अतीव महत्वपूर्ण स्थान रहा है।[1] इसमें पगड़ी हमारी भारतीय संस्कृति विशेषकर लोक जीवन एवं आदिवासियों का जीवन और परिधानों में से एक विशेष अंग है, जब हम लोक जीवन और उससे जुड़ी संस्कृति की बात करते हैं तो इसमें पगड़ी महत्वपूर्ण हो जाती है। यहाँ पर 'प' का अर्थ है प्रतिष्ठा और 'गड़ी' से अर्थ है जमे रहना जिसका तात्पर्य है प्रतिष्ठा को स्थापित करना। शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग मुख एवं सिर को माना गया है और पगड़ी उस अंग को सुशोभित करती है और यह परम्परा हजारों साल से चली आ रही है। राजा-महाराजाओं योद्धा एवं अमीर-गरीब परिवारों में सिर को ढ़के रहने का रिवाज पहले भी था और आज भी है, और भविष्य में भी रहेगा। इसका सौन्दर्य के साथ-साथ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है। हमारे सिर को सबसे संवेदनशील अंग माना गया है जो ज्यादा गर्मी से गर्म और सर्दी से ठण्ड महसूस करता है। जिसका हमारे मानसिक सन्तुलन पर असर पड़ता है। मामूली सा आघात भी यह बर्दाश्त नहीं कर पाता। अतः पगड़ी ही एक ऐसा परिधान है जो हमारे सिर को कवच प्रदान करता है।

"Indian culture is incomparable and admired in the whole world. Under which many elements are included. In these elements, costumes have played a very important place. [1] In this, turban is a special part of our Indian culture especially folk life and life of tribals and clothes, when we talk about folk life and the culture associated with it, in this The turban becomes important. Here 'P' means prestige and 'Gadi' means to remain fixed which means to establish prestige. The most important part of the body is considered to be the face and the head and the turban adorns that part. And this tradition has been going on for thousands of years. The custom of covering the head in kings and emperors, warriors and rich and poor families was there in the past and is still there, and will be in the future too. Along with its beauty, it also has a scientific approach. Our head is considered the most sensitive part One who feels hot from extreme heat and cold from winter. Which affects our mental balance. It can't tolerate even the slightest blow. Therefore, the turban is the only garment that provides armor to our head.

**मुख्य शब्दः** संस्कृति, अतुलनीय, प्रंशसनीय, परिधान, पगड़ी, संवेदनशील, रेगिस्तान, धूसर, अनुष्ठान, सिँधु घाटी सभ्यता, मोहन जोदडो, हडप्पा, लांघना, आत्म समर्पण, संवर्धन, संग्रहालय

**Keywords:** Culture, Incomparable, Admirable, Costume, Turban, Sensitive, Desert, Grey, Ritual, Indus Valley Civilization, Mohenjo Daro, Harappa, Transcend, Surrender, Enrichment, Museum.

**प्रस्तावना**

यहाँ हम एक दिलचस्प लोक मान्यताओं का जिक्र करना चाहेंगे। जिसमें कहा जाता है कि "राजस्थान के रेगिस्तान में एक भूरे और घूसर रंग का जहरीला साँप पाया जाता है। जो चलता

नहीं हवा में उड़ता है और सीधे मनुष्य के सिर पर वार करता है और ऐसे व्यक्ति का ईलाज अंधेरे में किया जाता है जहाँ सूर्य की रोशनी नहीं हो अन्यथा रोशनी के पड़ते ही जहर तीव्र गति से शरीर में फैल जाता है। वहाँ एक पगड़ी ही ऐसी वस्तु है जो आपको इस तरह के साँप के काटने से बचाती है।[2]

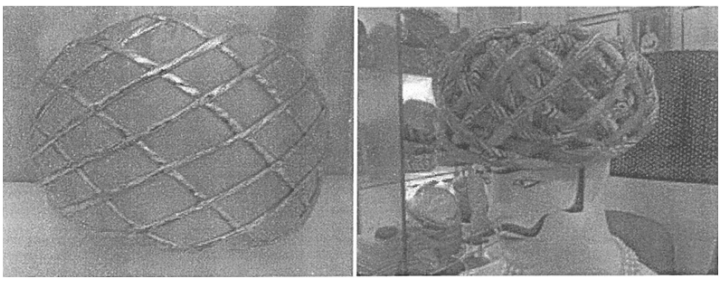

दूसरी कहावत है कि "राजस्थान में ऊँट जब मानसिक रूप से विक्षिप्त या पागल हो जाता है तो वह अपना पहला आक्रमण उसके साथ चलने वाले अपने मालिक के सिर पर करता है और ऐसे में जैसे ही पगड़ी को वह अपने मुँह से पकड़ने की कोशिश करता है इस बीच उसके मालिक को बचकर भागने का मौका मिल जाता है। यहाँ हम यह कह सकते हैं कि हमारे पूर्वजों में गजब का वैज्ञानिक दृष्टिकोण था जो आज भी हजारों साल बाद प्रासंगिक है।[3]

"पगड़ी का दूसरा पहलू यह भी है कि धार्मिक अनुष्ठान या शुभ कार्य करने में पूरा अर्चना के समय सिर पर किसी वस्त्र के अभाव में हमारे सिर पर हाथ रखकर ही वस्त्र धारण करने जैसे विकल्प की औपचारिकता पूरी की जाती है। रूमाल से सिर ढ़कना भी यही सिद्ध करता है जैसा कि हम कह चुके हैं इसका इतिहास बहुत प्राचीन है। सिन्धुघाटी सभ्यता, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा संस्कृति में पगड़ी की उपस्थिति दिखाई पड़ती है। पुरातन मूर्ति शिल्पों में पगड़ियों का अंकन स्पष्ट दिखाई देता है। यहाँ दिलचस्प बात यह है कि पगड़ी बाँधना एक विशिष्ट कला है और समाज में इसके कलाकार आज भी मौजूद हैं। पगड़ी सूती, रेशमी, जरतारी और शिफोन आदि में तैयार होती है।"[4]जयपुर राजघरानों के इतिहास में यह पागलपदार, शहगड़पाग, सफेदढाकाकारी, चन्देरी, ताशकी, बूशीरी, पोतियों, गुजराती, चौकड़ी, चिंटल री, पोचाताश, रूपेरी, नागोरण, मोलिया आदि नामों से पुकारी जाती है। जिनमें नागौरी पगड़ी प्रमुख है।

उदयपुर के उमराव पगड़ी, जयपुर का शाही साफा, जोधपुर का जसवन्त शाही पेच आदि प्रचलित है।

पगड़ी अथवा पाग हमारे समाज में दुःखःसुख को भी प्रतिबिम्बित करती है। जैसे शोक के समय मृतक के निकटवर्ती परिजन सफेद पगड़ी, तीये अथवा उठावणा पर गुलाबी, चन्देरी, सोसमी, खाकी, भूरी या काले रंग की पगड़ी पहनते हैं। विवाह के अवसर पर केसरिया या लाल चूनर, राखी पर बहन द्वारा मोठड़ा और होली पर फागुनिया बाँधने का प्रचलन है। दिवाली पर कहीं-कहीं राजस्थान में काली पगड़ी बाँधी जाती है।

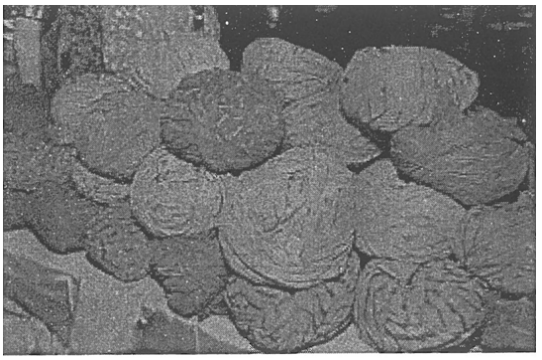

पगड़ी चूँकि सिर का अभिन्न अंग है। अतः इसको ठोकर मारना, लाँघना या नीचे रखने का अर्थ है कि पाग बाँधने वाले व्यक्ति का घोर अपमान जबकि उसका बंधवाना सम्मानसूचक है। अतिथि के सामने नंगे सिर आना कहीं-कहीं आज भी अपमानजनक अथवा अशुभ माना जाता

है। इसी तरह युद्ध स्थल से मात्र योद्धा की पगड़ी का लौट आना उसकी मृत्यु का सूचक है। वहीं पगड़ी को छीनकर लाना विजय का सूचक है और दुश्मन के हाथ लग जाना अपमानजनक है। पगड़ी हासिल करने के लिए लोग जान पर खेल जाते थे। पगड़ी को दूसरे व्यक्ति के पैर में रखने का तात्पर्य उस व्यक्ति के प्रति आत्मसमर्पण होता था। यहाँ की किसी भी धार्मिक समारोह, पूजा-अर्चना, मन्दिर-मस्जिद में देवी-देवताओं के समक्ष सिर ढँकना आवश्यक माना जाता है।

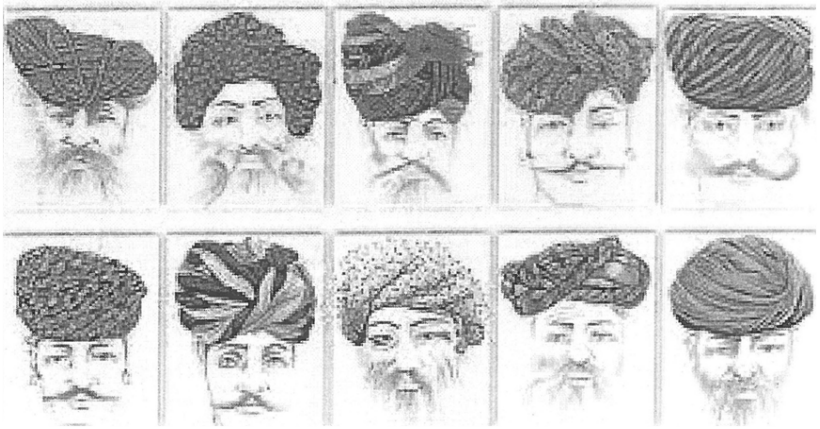

**अध्ययन का उद्देश्य**

इस शोध पत्र को लिखने का महत्वपूर्ण कारण हमारी संस्कृति से जुड़ी पगड़ी की महत्ता व इतिहास को जानना था, की पगड़ी हमारी संस्कृति में कब से जुड़ी हुई है अथवा पगड़ी का इतिहास कितना पुराना है तथा अलग अलग स्थान पर विभिन्न त्यौहार या उत्सव या अन्य किसी अवसर पर किस तरह की पगड़ी हमारे संस्कृति में बांधने का रिवाज है। पगड़ी हमारी संस्कृति से तथा हमारे दैनिक जीवन से किस तरह जुड़ी हुई है। इसी को जानने के लिए इस शोध पत्र को लिखा गया है।

**निष्कर्ष**

पगड़ी संस्कृति के महत्व को देखते हुए आज सरकार भी देश एवं विदेशों में उसका प्रदर्शन कला के तौर पर किया जाता है और यहीं वजह है कि आज दुनिया भर में अलग-अलग जगहों पर इसके शोध कार्य किये जा रहे हैं। फिर भी इसके संवर्धन और संरक्षण के लिए जरूरी है कि उस पर संग्रहालय की स्थापना हो, जिससे आने वाली पीढ़ियों को अपनी पुरातन संस्कृति एवं पहनावे की विस्तृत जानकारी मिल सकें अन्यथा यह संस्कृति खतरे में पड़ जायेगी।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *कमलेश माथुरः पगड़ी, पृ.सं.121, प्रथम संस्करण-1998*
2. *लोक कहावतः प्रबुद्ध जनों का वचनः मानव इतिहास काल*
3. *लोक कहावतः प्रबुद्ध जनों का वचनः मानव इतिहास काल*
4. *आर्टिस्ट सुरेन्द्र पाल जोशीः एक वक्तव्य (साक्षात्कार विधि)*
5. *तारकनाथ बड़ेरिया : भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रथम संस्करण- 2004*
6. *कमलेश माथुर : लोक संस्कृति के सोपान, प्रथम संस्करण 1998*
7. *चन्द्रमणि सिंह . राजस्थान की ग्रामीण कलाएं एवं कलाकार , प्रथम संस्करण 1997*

SSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

# रामकिंकर बैज के शिल्प में मानवीय संवेदनाः एक अध्ययन

# Human Sensation in the Crafts of Ramkinkar Baij: A Study

Paper id: 15672 Submission: 11/01/2022, Date of Acceptance: 21/01/2022, Date of Publication: 23/01/2022

**सारिका शर्मा**
शोधार्थी,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

**रीतिका गर्ग**
असिस्टेंट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

## सारांश

संवेदना शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द संवेद से हुई है, जिसका अर्थ है-सुखदुःख का अनुभव, ज्ञान बोध की प्रतीति होना। संवेदन के मूल में वेद शब्द है, जिससें वेदन व संवेदन शब्द बनते है। संवेदन शब्द पुल्लिंग शब्द है, इसमें आ प्रत्यय के योग से संवेदना शब्द स्त्रीलिंग बनता हैं।

अंग्रेजी के सेंसिबिलिटी (Sensibility), सैंसेशन (Sensation), सिम्पेथी (Sympathy), फीलिंग (feeling), जैसे शब्द संवेदना शब्द के समानार्थी है।[1] वृहद् हिंदी कांश में संवेदना, का अर्थ है- ज्ञान, अनुभूति जताना, सूचित करना, प्रकट करना इत्यादि[2]

संवेदना/वेदना का अर्थ ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव से हैं। आँख, नाक, कान, जिव्हा तथा त्वचा प्रमुख ज्ञानेन्द्रियाँ है। ये ज्ञानेन्द्रियाँ हमारे भावजगत को प्रभावित करती हैं। इनमें वातावरण के परिवर्तनों को ग्रहण करनें की क्षमता होती है। तथा इन संवेदो से हमें अपने आस-पास के वातावरण का बोध होता है। सामान्यतः संवेदना को सहानुभूति के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता हैं, तथा मनोविज्ञान में इसका अर्थ ज्ञान और ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव से हैं। संवेदनशील व्यक्ति दूसरों के दुःख दर्द को अच्छे से समझ लेता है, जब हम किसी अन्य का अपनी आत्मा पर लाते है, तब कहीं संवेदना का जन्म होता है।

संवेदना का संबध मानव के मन से हैं। किसी वस्तु को देखकर मानव के मन तरह-तरह के भाव उत्पन्न होते हैं, यही संवेदना है। भारतीय काव्यशास्त्र में इसे रस सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है, इस सिद्धान्त को भाव, विभाव, अनुभाव व संचारी भाव आदि सूक्ष्मभावों में विभाजित किया गया हैं। रति, हास्य, शोक, क्रोध आदि स्थायी भावों से रस की उत्पत्ति होती है। मानव हृदय में भावनाओं का प्रस्फुटन किसी बाह्य वस्तु, दृश्य या किसी परिस्थिति विशेष की कल्पना द्वारा होता है।[3]

किसी वस्तु या व्यक्ति को देखकर मन में जो भावना उत्पन्न होती हैं, वह भावना किसी को दुःखी देखकर भी हो सकती है और सुखी देखकर भी। क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं, और भावों की अनुभूति मानव को मानव से जोडने का कार्य करती हैं। संवेदना के संबध में आनंद प्रकाश दीक्षित लिखते है कि "कलाकार अपने परिवेश के संपर्क में आता हैं, परिवेश की कोई वस्तु, किसी प्रकार की संवेदना कलाकार में निर्माण करती है, इस संवेदना की प्रतिक्रिया के लिए या प्रत्युद्गार की अधीरता, यह आकुलता उसे प्रकाशन पर, अभिव्यंजना पर, अभिव्यक्ति पर विवश करती है। इस विवशता का परिणाम कलाकृति के रूप में प्राप्त होता है। संवेदना का आलंबन संसार की कोई वस्तु या घटना या प्रक्रिया होती है।"[4] अर्थात भावों को उत्पन्न करने में परिस्थितियों की अनुकूलता अपेक्षित है।

The word 'sensation' is derived from the Sanskrit word 'samveda', which means the experience of pleasure and pain, the realization of knowledge. At the root of sensing is the word Veda, from which the words Vedana and Sensing are formed.

Words like sensibility, sensation, sympathy, feeling, are synonymous with the word senses. [2]

Sensation/pain refers to the experience of the senses. Eyes, nose, ears, tongue and skin are the main sense organs. These sense organs affect our senses. They have the ability to absorb changes in the environment. And through these senses, we get a sense of the environment around us. Sensation is commonly used in the sense of empathy, and in psychology it refers to knowledge and experience of the senses. Sensitive person understands the pain of others very well, when we bring someone else's sorrow in our soul, then somewhere

sensation is born. Sensation is related to the human mind. Seeing an object, different types of feelings arise in the human mind, this is the sensation. In Indian poetry, it is known as Rasa Siddhanta, this principle is divided into subtle expressions like Bhava, Vibhava, Anubhav and Sanchar Bhava etc.Rasa is generated by permanent expressions like anger, humour, grief, anger etc. Emotions erupt in the human heart by imagining an external object, scene or a particular situation.[3]
Seeing any object or person, the feeling that arises in the mind, that feeling can also be on seeing someone sad and seeing happy. Because human beings are social animals, and the feeling of feelings works to connect human to human. Regarding sensation, Anand Prakash Dixit writes that "The artist comes in contact with his surroundings, any object in the environment, some kind of sensation creates in the artist."
The impatience of the response to this sensation, or the impatience of the response, compels it to manifest itself, to expression, to expression. The result of this compulsion is obtained in the form of artwork. The support of sensation is some object or event or process in the world.

**मुख्य शब्द / Keywords** ज्ञानेन्द्रियां, अभिव्यजंना, रससिद्धान्त, प्रतिक्रिया, आलम्बन।
Sense Organs, The Expression, The Taste, The Reaction, The Support.

**प्रस्तावना**

रामकिंकर बैंज के अनुसार "एक शिल्पकार बनने के लिए जब तक स्वयं मिट्टी तैयार न करों, स्वयं बनाओं, बिगाड़ो, संतुष्ट न होने तक साँचे में ढालो, पत्थर तराशों, लकड़ी कांटो, लोहे के तारों से संघर्ष करो, जब तक ये काम स्वयं नहीं करते, तब तक इस विद्या में पारगंत होना कठिन है।[5]

26 मई, 1906 ई. में पश्चिम बंगाल के बांकुरा शहर के पास जुग्गीपाड़ा गाँव में रामकिंकर बैज का जन्म हुआ। इनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी जिसके कारण इन्हें बचपन से ही संघर्षो का सामना करना पड़ा। सन् 1925 में रामानंद चटर्जी ने बैज की कला को पहचाना तथा आगे की शिक्षा के लिए शान्ति निकेतन भेज दिया। वहाँ कलागुरू नंदलाल बोस के सान्निध्य में रहकर बैज ने कला की शिक्षा प्राप्त की। शान्ति निकेतन के शांत, उल्लासपूर्ण वातावरण ने बैज को प्रभावित किया। कविता, संगीत, नाटक, प्राकृतिक सौन्दर्य बैज की कला के प्रेरणास्त्रोत बने। चित्रकला में निष्णात होने के बाद बैज ने मूर्तिकला में नवीन प्रयोग किए तथा सीमेंन्ट व कंकरीट माध्यम से मूर्तिशिल्पों की रचना करने वाले देश के प्रथम मूर्तिकार बने। स्क्रीन प्रिंटिग, रंग सज्जा जैसी विभिन्न विधाओं में कार्य किया।

प्रयोगधर्मी स्वभाव के धनी बैज ने हर तरह के माध्यम का प्रयोग किया, चाहे वह धातु हो, टेराकोटा हो, प्लास्टर हो या लकड़ी![6] बैज की कला ने देश में एक नयी शक्ति संचारित की। यह कहने मे अतिश्योक्ति नही होगी कि बैज के शिल्पों में भारतीय माटी की महक है। भारतीय परम्परा का नया कीर्तिमान स्थापित करने मे बैज का महत्वपूर्ण योगदान रहा। शान्ति निकेतन मे रहते हुए बैज ने रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस दृष्टिकोण को अपनाया कि परम्परा को, जो बेशक बहुत महत्वपूर्ण है, कलाकार व उसके विकास के बीच अड़चन नहीं बनने देना चाहिए।[7]

दैनिक जीवन के विषयों को बैज ने अपनी कला के माध्यम से जीवन्त किया। उन्होनें अपने आस-पास जो घटित घटनाएं देखी उनसे बैज बहुत प्रभावित हुए। जिस प्रकार एक व्यक्ति जिस समाज मे रहता है, समाज के साथ उसका जुड़ाव होना स्वाभाविक हैं, क्योंकि समाज के बिना व्यक्ति और व्यक्ति के बिना समाज की परिकल्पना नही की जा सकती। समाज में घटित घटनाओं का असर उस पर पड़ता है और वह शोकग्रस्त हो जाता है। यद्यपि एक कलाकार अपनी इस अनुभूति को कलाकृतियों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रकट करता हैं। रामकिंकर बैज ने अपनी अनुभूतियों को, संवेदनाओं को कलाकृतियों के माध्यम से प्रकट किया। बैज का झुकाव मुख्यतः सामान्यजन की ओर रहा जिनमें संघर्षशील प्राणी, महिला, निम्न मध्यम वर्ग के लोग शामिल थे। सामान्यतः बैज साधारण जीवन जीना पसन्द करते थे, इस कारण उनका अधिकाश समय इन्ही लोगों के साथ गुजरता था। दुनिया की चकाचौंध में रहना बैज के स्वभाव के विपरीत था। परिश्रमी लोग बैज को बहुत अधिक प्रिय थे, जिस कारण वे स्वतः बैज की रचनाओं में उभर जाते थें। यथार्थवादी शैली में बैज ने निम्न वर्ग

के लोगों के दुःख-दर्द को कलाकृतियों के माध्यम से दर्शाया और अपने हृदय का उद्गार प्रकट किया। सीमेंट, प्लास्टर, कंक्रीट-पत्थर से उन्होनें असंख्य मूर्तिया बनाई। रवीन्द्रनाथ टैगोर से लेकर सामान्य परिवार के व्यक्तियों का बैज ने चित्रण किया, इसके अलावा उन्होने राष्ट्रीय नेताओं के भी चित्र बनाए। बैज पर गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी जैसे महान विभूतियों का गहरा प्रभाव पड़ा। गांधी जी के समाज सुधारक आंदोलन से वे बहुत प्रभावित थे। गाँधीजी की दृष्टि से कोई भी कार्य छोटा या तुच्छ नहीं होता। वह सफाई करने, पाखाना साफ करने या मैला उठाने मे कोई बुराई नहीं देखते थे। वर्धा व सेवाग्राम मे रहते हुए स्वयं इन कार्यो को किया और लोगों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। निर्धन लोगों, बीमार व्यक्तियों, मेहनतकश मजदूरों के प्रति वे सहानुभूति रखते थे कभी कभी स्वंय रोगी की सेवा भी करते थे। सेवाभाव मे रहते हुए गांधीजी के चारों ओर ग्रामीण परिवेश विद्यमान था तथा जीव-जन्तुओं के प्रति दया, भाव, व करूणा उनके व्यक्तिव में झलकती थी। उनके प्रभाव से देश में सामाजिक प्रगति आयी। गांधीजी के अहिंसावादी सिद्धान्त का देश पर व्यापक प्रभाव पड़ा। स्वंय बैज गांधीजी से बहुत अधिक प्रभावित हुये उन्होंने संघर्षशील व्यक्ति, महिला, निम्न मध्यम वर्ग के लोगों की वेदना को कलाकृतियों के माध्यम से समाज के समक्ष एक नयी सोच, विचार के साथ दर्शाया उससे सामान्यत वर्ग के लोगों का नजरिया बदल सकें। बैज की बनाई हुई कृतियां ऊर्जा उल्लास से ओतप्रोत मानव जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति है।

विनोदिनी, कुत्ते के साथ महिला, गोल्डन क्रॉप, ए स्टेण्डिंग वुमेन, पिकनिक, थ्रेसिंग, मदर एण्ड चाइल्ड, समरनून आदि बैज के प्रमुख चित्र है, जो तैलीय पद्धति से बने हैं इसके अलावा उन्होनें अनेक मूर्तिशिल्प बनाये। मिलकॉल, संथाल परिवार, मिथुन, रवीन्द्र नाथ टैगोर, दांडीमार्च, गांधी, यक्ष-यक्षिणी, हार्वेस्टर और लैम्प स्टैण्ड बैज के प्रमुख मूर्तिशिल्प है। एक ही विषय पर बैज ने विभिन्न माध्यमों से कलाकृतियों का निर्माण किया। संथाल जनजाति ने बैज को विशेषतः प्रभावित किया सामान्यतया संथाल जनजाति जंगलों में रहती है और अपनी आजीविका के निर्वहन के लिये मछली पकडने, शिकार करने तथा खेती जैसे कार्यो में संलग्न रहती है। बैज ने संथाल फैमिली पहले मृणमयी माध्यम में बनाई बाद में सन् 1938 में पुनः सीमेंट व कंकरीट माध्यम से बडा मूर्तिशिल्प बनाया। 427 से.मी. ऊँचा यह मूर्तिशिल्प वर्तमान में कला भवन शान्ति निकेतन के प्रांगण की शोभा बढ़ा रहा है। इस शिल्प में बैज ने संथाल परिवार को दर्शाया है। परिवार मे पति-पत्नि व दो बालक है। संथाल पुरूष के बांये कंधे पर कावड़ है, जिसमें आगे की टोकरी में एक बालक को बैठे हुये दिखाया है, तथा कावड़ का भार संतुलित रखने के लिये पीछे की टोकरी में घरेलू सामान रखा हुआ है। संथाल महिला ने अपने बांये हाथ से शिशु को गोद में ले रखा है उनके साथ एक कुत्ता भी दर्शाया है, जो पशुओं के प्रति मानवीयता का भाव प्रदर्शित करता है। इन सभी को देख कर लगता है कि संथाल परिवार आजीविका की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन कर रहा हो। इस शिल्प में की शारीरिक मुद्रा गतिमान अवस्था में है। ऊर्जा उल्लास की शक्ति से ओतप्रोत यह मूर्तिशिल्प समाज के लोगो को परिवार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के प्रति प्यार प्रेम की भावना विकसित करता नजर आता है।

मानव आकृतियों की रचना में बैज ने गति पर अधिक ध्यान दिया। प्रयोगों व खोजो के परिमाणस्वरूप कलाकृतियों के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को प्रकट किया। इसके अलावा बैज ने रवीन्द्र नाथ टैगोर का व्यक्ति चित्र बनाया इसे देखकर टैगोर ने बैज से कहा था "रामकिंकर अब पीछे पलटकर मत देखो आगे बढते जाओ"।[8] इसके बाद बैज ने कभी पीछे पलटकर नहीं देखा और आगें बढते गये। यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा बनाने से पहले बैज ने अनेक संग्रहालयो में स्थापित यक्ष-यक्षिणियों की मूर्तियों का गहराई से अध्ययन किया। 14 फीट ऊँची यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा कुषाणकाल से प्रभावित मानी जाती है। इस प्रतिमा को तैयार करने में दस वर्ष का समय लगा। बैज के द्वारा बनायी गई यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमा सजीव प्रतीत होती है, इसमे एक असीम ऊर्जा का आभास होता है। इसे सन् 1970 में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली की इमारत के बाहर लगाया। इनके अधिकतर मूर्तिशिल्पों में टैक्सचर खुरदरापन लिये हुए है। इसके अलावा कच व देवयानी मूर्तिशिल्प में ताजगी व कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति है।[9] मदर एंड चाइल्ड प्रसिद्ध श्रृंखला में बैज ने अनेक मूर्तियाँ बनाई।

सन् 1934 मे बिहार में भूकम्प आया, गांधीजी ने भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों मे पीडितों की मदद की। बैज ने इस घटना को कलाकृतियों के माध्यम से जीवन्त किया। अकाल शीर्षक से बने हुए उनके शिल्प गत्यात्मक है। रामकिंकर बैज के व्यक्तित्व व कृतित्व से साहित्यकार व फिल्मकार भी बहुत प्रभावित हुए। बांग्ला के प्रसिद्ध उपन्यासकार "समरेश बसु"ने रामकिंकर बैज के जीवन पर आधारित अपने उपन्यास का नाम दिया "देखी नाइ फिरे" (नेवरलुक्ड बैक)[10]

दांडी मार्च नामक मूर्तिशिल्प मे बैज ने गांधी को धोती पहने हुए तथा हाथ मे लकड़ी को पकड़े हुए दृढ़ निश्चय के साथ खड़े हुए दिखाया गया है। घटना के अनुसार अंग्रेजों के द्वारा नमक पर कर लगाया गया तथा भारतीयों को नमक बनाने से रोका जाने लगा। इससे भारतीय जनता बहुत परेशान व हताश हो गई। 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने अपने अनुयायियों के साथ मिलकर पैदल यात्रा की, 24 दिनों की यात्रा के बाद दांड़ी पहुँचकर नमक कानून तोड़ने का संकेत दिया, जब यह प्रक्रिया पूरे देश मे दोहराई गई तब प्रशासन को समझ मे आया कि यह घटना भारत मे ब्रिटिश शासन के अस्तित्व पर गंभीर संकट पैदा करती है। इस घटना को बैज ने अपनी कला के माध्यम से जीवन्त किया।

मिलकॉल नामक मूर्तिशिल्प में बैज ने चावल की मील में काम करने वाली दो स्त्रियों के साथ एक बालक को जाते हुए गतियुक्त मुद्रा में दर्शाया है। भागती-दौड़ती जिंदगी मे अपने स्वप्नों को पंख देती ये महिलाएँ अपनी आजीविका का भली-भॉति निर्वहन कर रही हैं। अपने स्वाभिमान के साथ वे परिस्थितियों का डटकर सामना करती है। इस मूर्तिशिल्प के माध्यम से बैज ने जीवन की संघर्षपूर्ण स्थिति को दर्शाया है। नारी के जीवन को अभिव्यक्त करता हुआ यह मूर्तिशिल्प वर्तमान में शान्ति निकेतन (प.बंगाल) मे स्थापित है।

इसके अलावा अमूर्त शैली में भी बैज ने अनेकों मूर्तिशिल्प बनाए। लेम्पस्टैंड बैज का पहला अमूर्त मूर्तिशिल्प है, त्रिआयामी रूप में प्रस्तुत यह शिल्प लम्बा व पेचीदा है। बैज ने समाज मे व्याप्त समस्याओं का गहनता से अध्ययन किया तथा प्रयोगों व खोजों के परिणामस्वरूप अपनी कला के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को प्रकट किया। कला के क्षेत्र मे अपूर्व योगदान के कारण उन्हें भारत सरकार द्वारा सन् 1970 मे पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2मई, 1980 को कला की इस महान विभूति का निधन हुआ।

**संथाल फैमिली**

**मिलकॉल**

**सुजाता दांडीमार्च**

**अध्ययन का उद्देश्य**

इस शोध का मुख्य उद्देश्य मानवीय भावो व उसके कारणो को गहराई से समझना है। तथा कला की उपयोगिता को सुनिश्चित करना है ।

**निष्कर्ष**

इनकी बनायी हुई कलाकृतियों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि रामकिंकर बैज ने अपने मूर्तिशिल्प के माध्यम से समाज के संवेदनशील पक्ष को उजागर करने की चेष्ठा की है, इनकें बनाए हुए शिल्पों के माध्यम से हमें श्रमिकों, दीन-दुःखियों कि परिस्थितियों का ज्ञान होता है, कि ये लोग जीवन निर्वाह के लिए किस तरह संघर्ष करते है। भावों व चिन्तन के जिन प्रक्रमों से बैज की कला गुजरती है, उसमें भारतीय संस्कृति व मानवीयता का भाव परिलक्षित होता हैं तथा संयोजन में सादगी व सरलता के दर्शन होते है। वर्तमान मे बैज के मूर्तिशिल्प दिल्ली, कोलकाता (शान्ति निकेतन), आदि सार्वजनिक स्थानों पर लगे हुए हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *तिवारी, भोलानाथ तथा चतुर्वेदी, महेन्द्र, व्यावहारिक हिन्दी अंग्रेजी शब्द कोश, नेशनल पेपरबेक्स, 2019,पृष्ठ सं.646*
2. *सहाय, कालिका प्रसाद एवं अन्य, वृहद हिन्दी कोश, ज्ञान मण्डल लिमिटेड़, वाराणसी, 2016, पृष्ठ सं.1409*
3. *गुप्त,गणपतिचन्द्र, भारतीय एंव पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009, पृष्ठ सं. 70*
4. *दीक्षित, आनन्दप्रकाश, आलोचना प्रक्रिया और स्वरूप,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1976, पृष्ठ सं.43*
5. *चतुर्वेदी, ममता, समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2017, 8वां संस्करण, पृष्ठ सं. 154*
6. *कक्कड़, कृष्ण नारायण, समकालीन कला संदर्भ तथा स्थिति, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1980, पृष्ठ सं. 16*
7. *मागो, प्राणनाथ, भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ सं. 180*
8. *प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिशिल्प का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 17 वां संस्करण, 2014, पृष्ठ सं.350*
9. *जोशी, ज्योतिष, समकालीन कला, अंक 38-39, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 2009,पृष्ठ सं. 23*
10. *भारद्वाज, विनोद, वृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2009, पृष्ठ सं.79*

SSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

# राजस्थान में स्थानीय राजनीति में महिला सशक्तीकरण (73 वें व 74वें संशोधन के संदर्भ में)

# Women Empowerment in Rajasthan (In the 73rd and 74th Amendment Issues)

Paper id: 15679 Submission: 11/01/2022, Date of Acceptance: 21/01/2022, Date of Publication: 23/01/2022

**सीमा टेलर (बेदी)**
शोधार्थी,
राजनीतिक विज्ञान विभाग,
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय
बीकानेर, राजस्थान,भारत

## सारांश

राजस्थान में महिला सशक्तीकरण (विशेष रूप से स्थानीय राजनीति में) के संदर्भ में 73वां व 74वां संविधान संशोधन युगान्तकारी घटना के रूप में हमारे सामने आता है। इन संशोधनों द्वारा प्रदत्त आरक्षण से पूर्व राज्य की स्थानीय स्तर की राजनीति में महिलाओं की उपस्थिति जहां नगण्य थी वहीं संशोधनों के बाद महिला प्रतिनिधित्व में आशातीत वृद्धि दर्ज की गई है। महिलाओं की स्थानीय राजनीति में बढ़ती सहभागिता विविध पहलुओं से महिला सशक्तीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुई जो स्थानीय राजनीति में इन संविधान संशोधनों द्वारा लाए गए क्रान्तिकारी परिवर्तन को अभिव्यक्त करती है।

In the context of women empowerment (especially in local politics) in Rajasthan, the 73rd and 74th Constitutional Amendments come before us as an epoch-making event. Prior to the reservation provided by these amendments, where the presence of women in the local level politics of the state was negligible, after the amendments, an unprecedented increase in women's representation has been recorded. The increasing participation of women in local politics has proved to be an important medium of women empowerment from various aspects, which expresses the revolutionary change brought by these constitutional amendments in local politics.

**मुख्य शब्द** - स्थानीय शासन, आरक्षण, महिला सशक्तीकरण, राजनीति
**Keywords -** Local Governance, Reservation, Women Empowerment, Politics

**प्रस्तावना**

भारत एक विकासशील लोकतंत्र की श्रेणी में आता है जिसमें स्थानीय शासन का विशिष्ट महत्व है। यदि किसी विकासशील राष्ट्र की राजनीति में कोई नया प्रयोग करना हो तो उसका प्रारम्भ स्थानीय शासन से किया जाना सर्वाधिक स्पष्ट परिणाम प्राप्ति को सम्भव बनाता है। स्थानीय शासन व लोकतन्त्र दोनों का एक महत्वपूर्ण पहलू है- सभी वर्गों को समुचित प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाना। भारत में अभी तक आधी आबादी (महिलाएं) पूर्ण प्रतिनिधित्व से वंचित रही है तथा इस वंचित वर्गको प्रतिनिधित्व देने के प्रयास का प्रारम्भ भी स्थानीय शासन से किया जाना सार्थक परिणाम प्रदान करने वाला रहा है। राजस्थान भारत का एक ऐसा ही राज्य है जहां महिलाओं की भूमिका को घर की चारदीवारी तक सीमित माना गया अतः इस राज्य की स्थानीय राजनीति में महिला सशक्तीकरण का अध्ययन अत्यन्त प्रासंगिक प्रतीत होता।

**अध्ययन का उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान की स्थानीय राजनीति में महिला सहभागिता पर 73वें व 74वें संविधान संशोधन के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

स्वतंत्र भारत में 2 अक्टूबर 1959 को सर्वप्रथम राजस्थान के नागौर जिले के बगदरी गांव में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा पंचायती राज व्यवस्था का औपचारिक प्रारम्भ किया गया। स्थानीय शासन व महिला सशक्तीकरण परस्पर सबंन्धित है तथा भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं व स्थानीय शासन को सम्मानपूर्ण औचित्यपूर्ण स्थान प्रदत्त करने का श्रेय दिया जा सकता है - 73वें व 74वें संविधान संशोधन को। इन संशोधनों के माध्यम से न केवल सत्ता के विकेन्द्रीकरण के द्वारा स्थानीय शासन संस्थाओं का सशक्तीकरण सम्भव हुआ बल्कि अब तक सत्ता में

भागीदारीसे वंचित महिलाओं को भी 33 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान के साथ ही ये महिला सशक्तीरण की दिशा में भी मील का पत्थर साबित हुआ।

महिला सशक्तीकरण एक बहुआयामी धारणा है, जिसमें महिलाओं काराजनीतिक सशक्तीकरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयाम दृष्टिगत होता है क्योंकि जब तक सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित न हो तब तक किसी भी वर्ग के सर्वांगीण विकास की कल्पना सम्भव नहीं हो सकती।
यदि राजस्थान राज्य में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकण के परिदृश्य पर 73वें व 74वें संविधान संशोधन से पूर्व नजर डाली जाती है तो यह बेहद निराशाजनक प्रतीत होता, परन्तु इन संशोधनों के पश्चात विशेष रूपसे स्थानीय राजनीति में कुछ सकारात्मक व उत्साहजनक परिणाम सामने आते हैं।

**73वें व 74वें संविधान संशोधन से पूर्व महिला सहभागिता की स्थिति**

आरक्षण प्राप्ति से पूर्व राजस्थान की स्थानीय राजनीति में भी अन्य राज्यों की भांति महिला सहभागिता नगण्य थी तथा इस सन्दर्भ में कोई विशेष प्रयास भी नहीं किए गए। राजनीतिक दलों की अरूचि के कारण जो प्रयास किए गए वे भी असफल रहे। पहली बार पंचायतों में महिलाओं के लिए 1/3 आरक्षण के प्रावधान वाला संविधान संशोधन विधेयक (64वां) सन 1989 में संसद में प्रस्तुत किया गयाजिसे पंचायती राज विधेयक के रूप में जाना जाता है, परन्तु इस विधेयक के कुछ प्रयोजनों व संदेह के वातावरण के परिणामस्वरूप यह लोकसभा में तो पारित हो गया लेकिन राज्यसभामें इसे बहुमत प्राप्त न हो सका। पंचायतीराज संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता को समझते हुए 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने अन्य राजनीतिक दलों से विचार विमर्श के बाद नया संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा में प्रस्तुत करवाया जिस पर श्री नाथूराम मिर्धा की अध्यक्षता में गठित संयुक्त संसदीय समिति (लोकसभा के 20 सदस्य व राज्यसभा के 10 सदस्य) द्वारा गहन विचार-विमर्श करके सुझाव प्रदान किए गए। इन सुझावों के आधार पर पहले लोकसभा फिर राज्यसभा द्वारा भी पारित किया गया व आधे से अधिक राज्यों के विधानमण्डलों की स्वीकृति के बाद 24 अप्रैल 1993 को राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के साथ 73 वां संविधान संशोधन लागू हुआ जिससे भारत में स्थानीय राजनीति में नये युग का सूत्रपात हुआ, वह युग जो सभी वर्गों की राजनीतिक सहभागिता सुनिश्चित करता है।

**73वें व 74वें संविधान संषोधन के बाद स्थानीय राजनीति में महिला सहभागिता**

73वें व 74वें संविधान संशोधन ने ग्रामीण व शहरी शासन के सभी निर्वाचित पदों पर महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण का प्रावधान किया जिसमें अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं के लिए भीपद आरक्षित है। 73वें संशोधन के बाद सम्पन्न 1995 के पंचायती राज चुनाव में 33ः आरक्षण के परिणाम स्वरूप महिलाओं ने जिला प्रमुख पद पर 32.25% जिला परिषद सदस्यों में 33.19%, पंचायत समिति प्रधान पद पर 33.75%, पंचायत समिति सदस्यों में 33.09% तथा सरपंच पदपर 33.35% सहभागिता प्राप्त की जो आरक्षण के प्रभाव की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। वर्तमान में राजस्थान में पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण प्रतिशत में वृद्धि कर 50ःकर दिया गया है जिसके बाद सम्पन्न 2015 के पंचायती राज चुनाव पर दृष्टिपात करें तो पुनःआरक्षण का सकारात्मक प्रभाव नजर आता है यथा जिला प्रमुख पद पर 54.54%, जिला परिषद सदस्यों में 50.69%, पंचायत समिति प्रधानपद पर 55.59%, पंचायत समिति सदस्यों में 52.70%, सरपंच पदपर 51.13% महिला सहभागिता रही। इस प्रकार अब तक महिला प्रतिनिधित्व से पूर्णतः वंचित ग्रामीण स्थानीय शासन में राजस्थान में वर्तमान में आधे से अधिक महिला जनप्रतिनिध है जो महिला सशक्तीकरण की दृष्टि से एक बेमिसाल उदाहरण है।
74वें संविधान संशोधन से नगरीय निकायों में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण से शहरी क्षेत्र में भी महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण का भी मार्ग प्रशस्त हुआ इससे पूर्व नगरीय निकायों में महिला भागीदारी का प्रतिशत बेहद निराशाजनक रहा 2021 में सम्पन्न 91 नगरीय निकायों के चुनाव में 3060 सदस्यों को निर्वाचित किया गया जिसमें 1170 (38.23% ) महिलाएं तथा 1889 (61.73% ) पुरूष चुने गये। आरक्षण का यह प्रावधान मात्र निकाय सदस्यों तक सीमित नहीं रहा अपितु अध्यक्ष पद पर भी लागू होता है जिससे महिला सशक्तीरकण अधिक प्रभावी रूप से लागू हुआ क्योंकि अब तक जो महिलाएं सामान्य सदस्य पद पर भी पहुंचने से वंचित रही थी उन्हें अब अध्यक्ष पद पर भी

33% की भागीदारी सुनिश्चित हुई। 2021 में सम्पन्न 91 नगर निकाय चुनावों में अध्यक्ष पद पर 33 (36.26% ) स्थान महिलाओं ने तथा 58 (63.74%) स्थान पुरूषों ने प्राप्त किए। इस प्रकार आरक्षण के बाद महिलाओं द्वारा प्राप्त प्रतिनिधित्व उनको प्राप्त आरक्षण से अधिक रहा अर्थात वे आरक्षित स्थानों के साथ-साथ अनारक्षित स्थानों पर भी निर्वाचित हई जो उनके राजनैतिक कौशल व योग्यता को व्यक्त करता है। स्थानीय राजनीति की तस्वीर 73वें व 74वें संशोधन द्वारा पूरी तरह परिवर्तित नजर आती है। राजस्थान में ग्रामीण स्थानीय राजनीति में तो महिलाएं पूरूषों से भी अधिक भागीदारी निभा रही हैं, (जब से 50 आरक्षण लागू हुआ है) वहीं नगरीय निकायों में भी महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नजर आती है।

स्थानीय संस्थाओं में महिला जनप्रतिनिधियों की संख्या बढ़ने से स्थानीय राजनीति के परिदृश्य में भी परिवर्तन स्पष्ट होता है क्योंकि अब राजस्थान की स्थानीय राजनीति में आधी आबादी का नहीं अपितु पूरी आबादी का पूर्ण योगदान है जो लोकतंत्र की धारणा को सार्थक बनाता है। 73वें व 74वें संविधान संशोधन को महिला सशक्तीकरण को प्रवर्तित करने वाली मौन क्रान्ति की संज्ञा दी जाती है क्योंकि इन संशोधनों की उपलब्धि में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है विविध क्षेत्रों व स्तरों पर महिला सशक्तीकरण (विशेष रूप से राजनीतिक सशक्तीकरण) आरक्षण प्राप्ति से जहां एक ओर महिलाओं में राजनैतिक जाग्रति व चेतना का विकास हुआ वहीं दूसरी ओर स्थानीय शासन में भागीदारी प्राप्त होने से महिलाओं के सम्मान व प्रतिष्ठा में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। जहां एक ओर संसद व राज्य विधानसभाओं में महिला भागीदारी का प्रतिशत 10 से भी कम है वहीं स्थानीय निकायों में ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ राज्यों में (जहां 50% आरक्षण लागू है) यह भागीदारी 55% तक भी है। वर्तमान में देश में महिला प्रतिनिधियों की संख्या लगभग 14 लाख है। राजस्थान जैसे राज्य में आरक्षण 50ः हो जाने से ग्रामीण राजनीति का दृश्य पूर्णतया परिवर्तित हो गया है। सत्ता में आने के पश्चात ये महिला जनप्रतिनिधि अपने क्षेत्र के विकास व अन्य महिलाओं के सशक्तीकरण में भी विशिष्ट रूचि प्रदर्शित करते हुए बहुत ही कुशलता से अपने कार्य को अंजाम देते हुए सफलता के नये आयाम प्रस्तुत कर रही है। इससे महिलाओं का न केवल राजनीतिक सशक्तीकरण हुआ अपितु उनका सामाजिक, शैक्षिक व आर्थिक सशक्तीकरण भी सम्भव हुआ।

महिलाओं को प्राप्त आरक्षण के परिणाम स्वरूप स्थानीय राजनीति का तो कायाकल्प हो गया परन्तु यह सुधार स्थानीय राजनीति तक सीमित नहीं रहना चाहिए अपितु ऐसे परिवर्तन के लिए राज्य स्तर व राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में गम्भीर प्रयासों की आवश्यकता है ताकि भारत एक सम्पूर्ण व वास्तविक लोकतंत्र बन सके तथा देश के विकास में पूरी आबादी के कौशल व क्षमता का सदुपयोग सुनिश्चित हो सके।

**अध्ययन का उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थान की स्थानीय राजनीति में महिला सहभागिता व सशक्तीकरण पर 73वे व 74वे संविधान संशोधन के प्रभाव का विश्लेषण करना है।

**निष्कर्ष**

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 73वे व 74वे संविधान संशोधन के प्रभावस्वरूप जहाँ एक ओर स्थानीय राजनीति में महिलाओं की सहभागिता में संख्यात्मक वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण का मार्ग भी प्रशस्त हुआ।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *पंचायती राज और महिलाएं - डॉ. विमला आर्य, प्रकाशन 2007, प्रकाशक राजस्थानी ग्रन्थागार*
2. *पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी - डॉ. कृष्ण चन्द्र चौधरी (कुरूक्षेत्र पत्रिका-जुलाई 2018)*
3. *राजस्थान के पंचायतीराज में 73वें संशोधन के बाद महिलाओं की स्थिति (सहभागिता, समस्याएं, निराकरण)- मीना श्रृंगी - श्रृंखला- एक शोध परक वैचारिक पत्रिका (अप्रेल 2018)*
4. *महिला सशक्तीकरण में पंचायतीराज की भूमिका- जितेन्द्र कुमार पाण्डेय ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 2006*
5. *https//sec.rajasthan.gov.in*
6. *राजस्थान पत्रिका*

SSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

# नागार्जुन के उपन्यास बाबा बटेसर नाथ में व्यंग्य

# Satire in Nagarjuna's Novel Baba Bateshwar Nath

Paper id: 15717 Submission: 11/01/2022, Date of Acceptance: 21/01/2022, Date of Publication: 23/01/2022

**विभा सिंह**
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश,
भारत

## सारांश

बाबा बटेसर नाथ में व्यंग्य की मूल प्रवृत्ति यह है कि लेखक ने जड़ प्रकृति के एक घटक बरगद जो युगों-युगों से मानव समाज के विकास के तमाम स्तरों का साक्षी रहा है, से ग्रामीण युवकों नागरिकों की चेतना को उद्बुद्ध करता है। यह उपन्यास भारत के उन तमाम बुद्धिजीवियों , कलाकारों, समाजहित चिन्तकों तथा संस्थाओं जिन्होंने अपना लक्ष्य ही पर संग्रह बना लिया है, पर करारा व्यंग्य है। जब जड़ बरगद की जड़े मानवता से दूर तक साथ निभाने के कारण मानवता की बेहतरी के लिए चिन्तित हो सकता है तो आखिरकार हम पढ़े-लिखे लोग क्या कर रहे हैं मानव जीवन की स्वार्थ वृत्ति पर यह उपन्यास एक तीखा व्यंग्य है। आज का मानव, मानव को बिना स्वार्थ देखने को तैयार नहीं है और बरगद अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार है। अपने को मानवता के हक की भट्ठी में झोंकते हुए उस बूढ़े बरगद ने जो जयकिशन को सलाह दिया वह था ग्राम पंचायतों की स्थापना का। नागार्जुन ने जब यह उपन्यास लिखा था तो अभी पंचायतीराज का प्रारूप भी शायद पूरी तरह तय नहीं हुआ था बाद में हुआ था बरगद प्रकृति का अंग है प्रकृति का अर्थ ही स्वाभाविक है इसलिए बरगद की राय नागार्जुन की राय में सर्वाधिक स्वाभाविक राय है इसी रास्ते पर चलकर मानवता का वास्तविक हित साधन हो सकता है।

The basic trend of the satire in Baba Batesar Nath is that the author evokes the consciousness of rural youth citizens from the banyan, a component of inert nature, which has been a witness to all the levels of development of human society since ages. This novel is a satire on all those intellectuals, artists, social thinkers and institutions of India who have made a collection on their own goal. When the roots of the banyan can be concerned for the betterment of humanity due to far away from humanity, then what are we educated people doing after all, this novel is a sharp satire on the selfishness of human life. Today's man is not ready to see man without selfishness and Banyan is ready to sacrifice everything. Throwing himself into the furnace of human rights, the old Banyan advised Jaikishan to establish village panchayats. When Nagarjuna wrote this novel So now the form of Panchayati Raj was also probably not completely decided, later it happened that banyan is a part of nature, the meaning of nature is natural, so the opinion of banyan is the most natural opinion in Nagarjuna's view, following this path should be the real benefit of humanity. could.

**मुख्य शब्द:** प्रवृत्ति , बुद्धिजीवी , न्यौछावर , परसंग्रह , पंचायती राज।

**Keywords:** Tendencies, Intellectuals, Sacrifices, Collections, Panchayati Raj.

**प्रस्तावना**

जीवन को साहित्य में अपनी सर्वांगमयता में प्रस्तुत करने का सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम उपन्यास है। नागार्जुन जीवन के वास्तविकताओं के साहित्यकार है यही कारण है कि कविता के साथ-साथ उपन्यास को भी अपनी रचना धर्मिता का माध्यम बनाया। कविता की सांकेतिकता कितनी मात्रा में जनता तक सम्प्रेषित हो सकती है यह उस समाज के पाठक पर आधारित है। मेरे कथन का तात्पर्य कविता पढ़ने के लिए थोड़ा परिष्कृत साहित्य संस्कार अपेक्षित है जबकि उपन्यास मानव के उबड़-खाबड़ जीवन के इतना पास है थोड़ा कम संस्कारिक व्यक्ति भी उन चीजों को हृदयंगम कर सकता है जो कि रचनाकार का मन्तव्य है। शायद उपन्यास विधा की इस जनप्रवृत्ति को देखते हुए ही ठोस प्रगतिवादी विचारधारा समन्वित साहित्यकार इस विधा में रचने को विवश हुए है। नागार्जुन के औपन्यासिक कृति में निहित व्यंग्य विचारणीय है। यहाँ इतना कह देना आवश्यक है कि नागार्जुन के व्यंग्य की प्रवृत्ति विवरणगत है वह भी परिवेश से ज्यादा सम्बन्धित है पूरा परिवेश ही जैसे एक खरे

व्यंग्य को परिभाषित करने लगता है। यह व्यंग्य कहीं पात्रों के माध्यम से बोलता है, कहीं प्रत्यक्ष रूप से होता है, कहीं अप्रत्यक्ष रूप से होता है वह कहीं न कहीं समाज से जुड़ा होता है। उनके जनकवि का रूप उनके उपन्यासों में भी देखा जा सकता है। कारण जनता से जुड़े होने के कारण उनके दर्द को अपना समझना ही उनके प्रेरणा और साहित्य सृजन का स्रोत है।

बाबा बटेसर नाथ में व्यंग्य - बाबा बटेसर नाथ नागार्जुन का 157 पृष्ठों में व्याप्त एक लघु उपन्यास है अपने छोटे कलेवर में लेखक ने गागर में सागर भर दिया है। मूल कथा मिथिला जनपद के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक संघर्षों एवं उसके उत्थान-पतन पर प्रकाश डाला गया है। यह एक आँचलिक उपन्यास होने के कारण इसकी विषयवस्तु अंचल विशेष की है। आंचलिक उपन्यास में एक कथा नहीं होती इस उपन्यास में भी अनेक कथाएँ है। इस उपन्यास में वट वृक्ष का मानवीयकरण किया गया है इसमें निम्न मध्यवर्गीय ग्रामीण जीवन चित्रित किया गया है।

बाबा बटेसर नाथ जयकिशन से सपने में ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्यम से ब्रिटिश कूटनीति स्वार्थी जमींदारों के अत्याचार कांग्रेस की भ्रष्ट और स्वार्थी शासन जमींदारों के उन्मूलन और गाँवों में आए परिवर्तन आदि की दर्द भरी व्यंग्यात्मक कहानी सुनाते हैं।

वट वृक्ष केवल निर्जीव वृक्ष न होकर मानवीय भावों एवं विकारों से युक्त संवेदनामय सजीव वृक्ष कल्पित किया गया है ऐसा लगता है कि वह समाज में व्याप्त किसानों का शोषण दलितों की दीन-हीन दशा, जमींदारों द्वारा किये अत्याचार, उत्पीड़न एवं शोषण आपसी ईर्ष्याद्वेष, समाज की परिवर्तनशील अवस्था, कांग्रेसी नेताओं की स्वार्थ वृत्ति, किसानों की साम्यवाद के प्रति सहज आस्था-भावना को देखने के लिए मूर्तिवत रूप में विद्यमान है।

एक व्यंग्य यहाँ वट वृक्ष करता है बीते युग की सड़ांध का समर्थन किसी कीमत पर नहीं करूँगा भविष्य तेरे जैसे तरूणों के हाथ में है। अन्यंत्र जयकिशुन से कहते समय बाबा कहते हैं "तू जिस युग में पैदा हुआ है। वह राजाओं, जमींदारों और सेठों, साहूकारों का युग नहीं बल्कि तेरे जैसे आम नौजवानों का जमाना है।"[1]

अकेले व्यक्ति जमींदारों के अत्याचारों के विरोध में नहीं लड़ सकता इसलिए बाबा सामूहिक शक्ति पर बल देते है। समाज की बुराइयों के विरूद्ध लड़ने के लिए वह समाज संगठन करना चाहता है। सामाजिक शक्ति से अवगत करते समय बाबा जयकिशुन से कहता है "झींगुर एक तुच्छ कीड़ा होता है सैकड़ों हजारों की तादाद में जब एक स्वर होकर आवाज करने लगता है तो अजीब शमां बँध जाती है झींगुरों की अब अखण्ड झंकार कई-कई पहर तक चलती रहती है सामूहिक शक्ति की इस एकाग्र महिमा के आगे मेरा मस्तक सदैव नत होता रहा है और होता रहेगा।"[2]

अपने जीवन का उद्देश्य परोपकार मानते हुए वे कहते हैं अगर अपना जीवन दूसरे के काम न आता तो वह जीवन असफल है इसलिए सामान्यजनों के हितों के लिए बाबा को मृत्यु भी स्वीकार है बाबा जयकिशुन से कहता है।

"पहले तुम्हें बता दूँ मुझे मृत्यु का भय किंचित मात्र भी नहीं है। जीवन मुझे प्रिय नहीं है यह मत समझ लेना। भला वह कौन है जिसे जीवन से विरक्ति हो परन्तु "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लोकानुमम्पाय".....

किसी सज्जन के मुख से मैंने कभी नहीं सुना जीने के लिए जीना है, नही है परोपकार के लिए जीना है। अगर मेरी मृत्यु जनसाधारण के लिए लाभप्रद हो तो नहीं चाहिए मुझको यह जीवन।[3]

यह उक्ति स्वार्थी व्यक्तियों के लिए एक सबक है जो सिर्फ अपने लिए जीते हैं बाबा तन-मन से समाज का कल्याण करना चाहता है उसका जीवन सेवा परायण है उसका एक उदाहरण इस उपन्यास में देखिए -

"मुसीबत में अगर किसी के काम न आया तो यह जीवन बेकार है। बेटा भूख ने लोगों की अतड़ियों का रस सोख लिया है। मैं बेहया हरा-भरा होकर यह सब देखा करता हूँ बेचैनियों का तूफान उठा करता मेरे अन्दर, धरती पर बहुत गुस्सा आता है कि जड़ों को तो यह भी रस पहुँचाया करती है, पर अकाल ग्रस्त मानव की घोर उपेक्षा करती है।"[4]

बाबा-परदादा राउत के बारे में कहते हैं तेरे परदादा चार गज की गाढ़ी धोती और ढाई गज की चादर लेकर पहुनईन करने निकलता था। जूते उसने कभी नहीं देखे।[5] यह उनकी आर्थिक स्थिति का द्योतक

है। अंधविश्वास पर व्यंग्य करते हुए लेखक ने लिखा है - ''पंडित ने महीनों तक चंड़ी पाठ किए साधकों ने एक-एक मंत्र को लाखों लाखों बार जपा सब व्यर्थ वरूण को दया नहीं आई।[6]

**अध्ययन का उद्देश्य**

उपन्यासकार ने धार्मिक अंधविश्वास रीति-रिवाज तथा कुप्रथाओं की कड़ी आलोचना करते हुए ग्रामीणजनों को उससे मुक्त होने का आदेश दिया है। सामाजिक कुप्रथाओं और रूढ़िग्रस्तता तोड़ने के लिए लेखक ने शिक्षा की अनिवार्यता व्यक्त की है जैसे-जैसे समाज में शिक्षा का प्रचार बढ़ता रहेगा वैसे लोग अंधश्रद्धा से मुक्त रहेंगे।

**निष्कर्ष**

अतः उपन्यासकार नागार्जुन एक सर्जनशील कलाकार हैं गरीबी दरिद्रता, भूख, पीड़ा को उन्होंने स्वयं बचपन से अनुभव किया है भ्रमणशील प्रवृत्ति के कारण उपेक्षित समाज को उन्होंने नजदीक से देखा है, परखा है अतः गरीबों को पक्षधर बनाकर साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति की है। इस तरह यह उपन्यास और उसमें निहित व्यंग्य सर्जना का व्यापक कैनवास देता है जो मानवता के सर्वाभाविक विकास के पक्ष में।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *बाबा बटेसर नाथ, पृ0सं0-51*
2. *बाबा बटेसर नाथ, पृ0सं0-19*
3. *उमेश शास्त्री हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, पृ0सं0-1441*
4. *बाबा बटेसर नाथ, पृ0सं0-57*
5. *बाबा बटेसर नाथ, पृ0सं0-54*
6. *उपर्युक्त, पृ0सं0-55*

SSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-10* January-2022
Anthology : The Research

# कालीदास की पर्यावरण चेतनाः अभिज्ञानशाकुन्तलम् एवं रघुवंशम् महाकाव्य के विशेष सन्दर्भ में

# Environmental Consciousness of Kalidasa: With Special Reference to the Epic Abhigyan Shakuntalam and Raghuvansham

Paper id: 15493 Submission: 11/01/2022, Date of Acceptance: 21/01/2022, Date of Publication: 23/01/2022

**प्रत्यंचा पाण्डेय**
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्राचीन इतिहास विभाग
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश,भारत

**सारांश**

भारतीय समाज आदिकाल से पर्यावरण संरक्षक की भूमिका निभाता रहा है। कालीदास ने अभिज्ञानशाकुन्तल एवं रघुवंशम् महाकाव्य में प्रकृति प्रेम को सर्वोपरि रखा। पर्यावरण संरक्षण के प्रति हम प्राचीनकाल से अत्यन्त सजग रहे है। भारत में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति प्रेम की जड़े अत्यन्त गहरी है। कालीदास ने अपने महाकाव्य अभिज्ञानशाकुन्तलम् एवं रघुवंश में, पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पतियों के माध्यम से पर्यावरण को परिभाषित किया है। पर्यावरण और प्रकृति प्रेम को जीवन से अभिन्न रूप से जोड़कर संरक्षण की बात कही गयी है। कालीदास ने शिव पार्वती के महात्म्य को बताते हुए दर्शाया है कि एक व्यक्ति द्वारा पालित पोषित वृक्ष एक पुत्र से भी अधिक महत्व रखता है। हमारे ऋषियों मनीषियों ने प्रकृति प्रेम का अद्भुत उल्लेख किया है। शकुन्तला का वनस्पतियों, फूलों से इतना प्रेम था कि वो अपने श्रृंगार तक के लिए फूल नहीं तोड़ती थी। हमारे देश में वृक्षों के पोषण और पल्लवन की समृद्ध परम्परा रही है।

Indian society has been playing the role of environmental protector since time immemorial. Kalidasa placed the love of nature at the top in the epics Abhijnana Shakuntalam and Raghuvansham. We have been very conscious about environmental protection since ancient times. The roots of environmental protection and love for nature are very deep in India. Kalidasa in his epic Abhijnana Shakuntalam and Raghuvansh, defines the environment through earth, water, air, vegetation. Conservation has been said to be integral to life by linking the love of the environment and nature. Kalidas, while describing the greatness of Shiva Parvati, has shown that a tree nurtured by a person is more important than a son. Our sages have given wonderful mention of the love of nature. Shakuntala was so much in love with plants and flowers that she did not even pluck flowers for her makeup. Our country has a rich tradition of nurturing trees and planting trees.

**मुख्य शब्दः** कृति प्रेम, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रघुवंशम्, पर्यावरणम् वनस्पतियों, कालीदास, वृक्ष, हारिणी, शकुन्तला।

**Keywords:** Kriti Prem, Abhijnanashakuntalam, Raghuvansham, Paryavam Vatanas, Kalidas, Trees, Harini, Shakuntala.

**प्रस्तावना**

पर्यावरण क्या है, सर्वप्रथम यह विचार का विषय है। वस्तुतः पर्यावरण शब्द 'परि' एवं आ उपसर्ग पूर्वक नृ धातु से ल्युट प्रत्यय के योग से निष्पन्न है। परितः सम्यक् वृणोति आच्छादयतीति पर्यावरणम् अभिप्राय यह है कि मानव के चतुर्दिक जो कुछ भी नैसर्गिक (प्राकृतिक) स्थावर एवं जंगमरूप आवरण अस्तित्वमान है, वह सब प्राकृतिक परिवेश पर्यावरण कहलाता है। इस प्रकार पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नदियाँ, वृक्ष, औषधियाँ, वनस्पतियाँ एवं पशु-पक्षी आदि सभी की छत्रछाया में हम जीवन जी रहे है। अतः ये ही पर्यावरण के मूल तत्व है। स्वस्थ जीवन हेतु इन तत्वों के मध्य सन्तुलन अस्थिर होने पर पर्यावरण प्रतिकूल हो जाता है और यह प्रतिकूलता न केवल मानव जीवन अपितु पशु पक्षियों एवं वनस्पतियों आदि सभी को प्रभावित (विनष्ट) करने लगता है। सभ्यता के उप काल से ऋषियों, महर्षियों, चिन्तकों एवं कवियों आदि ने पर्यावरण के अस्तित्व को बनाए रखने पर आग्रह किया था। संस्कृत काव्याकाश के भास्कर कविता केलि कला विलास महाकवि कालिदास विश्वविश्रुत कवि है वे अद्भुत प्रकृति-प्रेमी थे। उनकी रचनाओं ऋतुसंहार, मेघदूत अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कुमारसंभवम् एवं रघुवंशम् इत्यादि में उनका पर्यावरण विस्तार से उजागर हुआ है। यहाँ हमने अभिज्ञानशाकुन्तलम् एवं रघुवंशम् में कालिदास पर्यावरण चिन्तन को विषय बनाया है। अभिज्ञान शाकुन्लतम् के प्रथम अंक के प्रथम श्लोक में ही जहाँ वे अष्टमूर्ति भगवान शंकर की स्तुति कर रहे है (वहाँ सब-कुछ शिवत्व से ओत-प्रोत है) वहाँ पर्यावरण के बीज तत्व प्रस्फुटित होते दिखायी पड़ते है, सृष्टि के प्रत्येक कण में जीवन स्पन्दित है। वे अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कहते है-

**या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या वहित विधिहुतं या हविर्याच होत्री**
**ये द्वे कालं विधित्तः श्रुति विषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्**

**यामुहः सर्वबीज प्रकृतिरीति यया प्राणिनः प्राणवन्तः**
**प्रत्यक्षाभिः प्रयन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टा भिरीशः**[1]

भवगान् शिव इस जल के रूप में प्रत्यक्ष दिखलाई देते है, जिसे बह्मा ने सबसे पहले बनाया था। वे इस अग्नि के रूप में दिखलायी देते है, जो विधि के साथ दी हुई हवन-सामग्री को ग्रहण करती है वे उस होता के रूप में दिखलाई देते है, जिसे यज्ञ करने का कार्य मिला हुआ है। वे उस चन्द्र एवं सूर्य के रूप में प्रत्यक्ष है जो दिन-रात का समय निर्धारित करते है। उस महाकाश के रूप में अवस्थित है जो सब चीजों को उत्पन्न करने वाली है। वे उस वायु के रूप में प्रवहमान है जिसके कारण सभी जीव जीवन धारण करते है उपर्युक्त जल, अग्नि, होता, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथ्वी और वायु के आठ रूपों में जो भगवान शिव सबको प्रत्यक्ष दिखलायी पड़ते है वे सभी का कल्याण करें। उल्लेखनीय कि पर्यावरण के सभी मूलतत्वों की ओर कालिदास ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। विचारणीय है कि रघुवंशम् के द्वितीय सर्ग में भी अष्टमूर्ति का संदर्भ आया है। कालिदास कहते है कि अवेहि मां किङरभष्टमूर्ति कुम्भोदरंकाम निकुम्भामित्रम्। कालिदास आश्रम की रक्षा में पूर्णरूपेण तत्पर है कारण कि आश्रम पर्यावरण के जीवन्त (सघन) केन्द्र है। राजा दुष्यन्त मृग का शिकार करना चाहते है लेकिन आश्रम का वैखानस नामक तपस्वी उन्हें मृग का शिकार करने से रोकता है। बहुत ऊँची आवाज में वह कहता है-राजन्। आश्रममृगोदयं न हन्तत्यो न हन्तव्यः[2]

अन्यन्त्र आश्रम संस्कृति का अत्यन्त उत्कृष्ट चित्रण हुआ है जहाँ मृग निर्भीक होकर राजा के रथ का शब्द सुन रहे है मृग होने छोने चैकड़ी भर रहे है उन्हें कोई न तो स्पर्श करेगा और न ही मारेगा उल्लेख आता है कि-

**विश्वासोपगमाद भिन्न गतयः शब्दं सहन्ते मृगाः।**
**नष्टाशङ हरिणशिशवो मन्द मन्दं चरन्ति।**

कण्व पालित पुत्री शकुन्तला न केवल अपने पिता की आज्ञा से पौधों को सींचती है अपितु वह स्वयं पौधों को अपने सहोदर (सगे भाई) के समान अतिशय स्नेह देवी है- न केवल तातनियोग एवं अस्ति में सोदर स्नेहोऽय्येहेष।[3]

अन्यत्र शकुन्तला यह कहती है कि यदि मैं वनज्योत्सना (वन की चांदनी) को भूल जाऊँगी वृक्ष पुष्प एवं लताओं आदि के साथ अपनत्व का यह कैसा अनोखा निदर्शन वृक्षो एवं लताओं को सींचते सींचते वह थक जाती थी और घड़े उठाते-उठाते हथेलियाँ लाल हो जाती थी।

**स्त्रस्तांसावतिमात्र लोहित तलौ बाहू घटोत्क्षेपणाः॥**[4]

शकुन्तला की विदाई के अवसर पर उसके पिता कण्व तपोवन के वृक्षो से अनुमति प्राप्त करने हेतु कहते है।

**पातु न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या**
**नादते प्रियभण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।**
**आद्ये व कुसुम प्रसूति समये यस्या भवत्युत्सवः**
**सेषं यति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्॥**
**अर्थात जो तुम्हें पिलाये बिना स्वयं जल नहीं पीती थी।**

पुष्पप्रेमी होने पर भी जो स्नेहवश तुम्हारे कोमल पतो को नहीं तोड़ती थी, तुम्हारी नयी कली को देखकर जो आनन्द विभोर हो जाती थी वही शकुन्तला आज अपने पति के घर जा रही है तुम सभी इसे अपनी मांगलिक कामनाओं एवं आशीर्वचनों से अधिष्ठित कर पति के घर जाने की अनुज्ञा प्रदान करो[5]

महाकवि कालिदास ने वृक्षो, पौधों, लताओं एवं वनस्पतियों के साथ शकुन्तला के साहचर्य एवं आत्मीयता का कैसा रागात्मक निदर्शन प्रस्तुत किया है। यही नहीं शकुन्तला के विदाई के अवसर पर तपोवन आश्रम में उदासीनता का संचार हो गया है।

**उद्ललितदर्मकवला मृगाः परित्यक्तानर्तना मयूराः।**
**अपसृत पाण्डुयत्रा मुंचत्यश्रूणीव लता॥**

अभिप्राय यह है कि हरिणियाँ कृश के कौर उगल रही है मयूरों ने नाचना छोड़ दिया है और लताओं से पीले-पीले पत्ते इस प्रकार झड़ रहे है मानो उसके आँसू गिर रहे हो[6]

रघुवंशम् में भी कालिदास ने अनेक स्थलों पर पर्यावरण के महत्व पर प्रकाश डाला है। द्वितीय सर्ग में शंकर जी के निवास के निकट अर्थात् कैलाश पर्वत पर देवदारू का वृक्ष है जिसे भगवान् शंकर पुत्रवत् स्नेह देते है तथा पार्वती जी ने इसे सींचकर पोषित पल्लिवत किया है। उल्लेख और भी आता है कि एक बार एक जंगली हाथी इसके तने में रगड़-रगड़कर अपनी कनपटी खुजलाने लगा उसकी थोड़ी सी छाल छिल गयी इतने से ही पार्वती जी को उतना ही शोक हुआ जितना दैत्यों के बाणों से आहत कार्तिकेय को देखकर हुआ था।[7]

रघुवंशम् के पाँचवे सर्ग में कालिदास ने पर्यावरण का अनुपम वर्णन किया है। यहाँ पर्यावरण की संस्कृति प्राणवन्त हो गयी है। महाराज रघु के पास वरतन्तु के शिष्य कौत्स ऋषि गुरू दक्षिणा के लिए धन मांगने

के निमित उनके पास गए। रघु ने आचार्य वरतन्तु की कुशलता की जानकारी लेने के पश्चात् कौत्स से जिज्ञासा व्यक्त की आप लोगों ने आश्रम के जिन वृक्षों के थाले बनाकर उन्हें पुत्रवत् बड़े स्नेह से पाला है और जिनसे पथिकों को छाया मिलती है। उन वृक्षों को आंधी पानी आदि प्राकृतिक आपदाओं से कोई हॉनि तो नहीं पहुँची है। हरिणियों के छोटे-छोटे बच्चे तो कुशल से है। आगे और भी उल्लेख प्राप्त होता है उन नदियों का जल तो ठीक है जिनमें आप लोग प्रतिदिन स्नान संध्या आदि करते है और जिनके रेती पर आप लोगों ने अपने चुने हुए अन्न का छठा भाग राजा का अंश मानकर छोड़ रखा है। जिन तिन्नी के अन्नों और फलों से आप लोग अतिथियों का सत्कार करते है और जिन्हें खाकर ही आप लोग जीवन जीते है उन्हें आस पास वाले गांव के पशु तो नहीं चर (खा) जाते है।[8]

कालिदास अभिज्ञानशाकुन्तलम् के छठे अंक में पर्यावरण का अत्यन्त मनोहारी दृश्य उपस्थित करते हुए राजा दुष्यन्त कहते है मुझे वह मालिनी नदी बनानी है जिनकी बालू के ढेर में हंस के जोड़े बैठे हो। उसके दोनों तरफ हिमालय की तलहटी में हिरण के झुण्ड बैठे हो। मैं एक ऐसा वृक्ष बनाना चाहता हूँ जिसकी डालों से पेड़ की छाल के कपड़े वल्कल लटक रहे हो उन वृक्षों के तले (नीचे) एक हरिणि अपनी बांयी आंख किसी काले मृग की सींग पर रगड़कर खुजला रही है। बसन्त ऋतु में सम्पूर्ण प्राकृतिक परिवेश अत्यन्त हृदयाकर्षक बन जाता है सर्वत्र उल्लास एवं आनन्द की छठा प्रस्फुटित होती जान पड़ती है। नयी-चेतना नया जीवन एवं नव सृजन का संचार ही उमड़ पड़ता है। बसन्त का आगमन सभी प्रकार से मंगलकारी है। प्रसन्तादयक है।[9]

इसी प्रकार के भाव का सप्रकाशन ऋतुसंहार के वसन्तवर्णनम् नामक छठे सर्ग में भी हुआ है अभिप्राय यह है कि आम्र की कोमल मंजरियाँ जिसके उत्तम बाण है। पलाश के सुन्दर फूल जिसका धनुष है भौरे जिसकी डोरी है, कलंकहीन चन्द्रमा जिसका सफेद छत्र है। मदोन्मत् हाथी जिसके मलयपवन है तथा कोपले जिसका चारण है वे कामदेव-वसन्तागमन के समय सर्वविध-मंगल अर्थात् कल्याण करें।10

**अध्ययन का उद्देश्य**

मानव जीवन को बनाए रखने के लिए प्रकृति एवं पर्यावरण को संरक्षित एवं समृद्ध बनाए रखना नितान्त आवश्यक है। हम सदैव प्रकृति के प्रति आस्थानत रहे उससे उर्जा और प्रेरणा प्राप्त करते रहे। सुखी, शांत, आपदा रहित जीवन प्रकृति एवं पर्यावरण के संरक्षण से ही संभव है। प्रकृति एवं पर्यावरण में ईश्वर का प्रतिरूप देखकर उनकी उपासना करना ही श्रेयस्कर होगा।

**निष्कर्ष**

निष्कर्ष रूपेण यह प्रतिपादित किया जा सकता है कि कलिदास साहित्य में नदियों पर्वताश्रृंखलाओं, वृक्ष, फूल, वनस्पतियों, औषधियों हरिण-हरिणियों आदि के सन्दर्भ अनेक स्थलों में बिखरे पड़े है। ये सभी पर्यावरण के सर्जका है। कालिदास पर्यावरण सृजन के प्रति जितने जागरूक थे उससे कहीं अधिक तत्पर थे, उसकी रक्षा के लिए। उनका पर्यावरण चिंतन सभी के लिए प्रासंगिक एवं नितान्त उपयोगी है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *अभिज्ञान शाकुन्तलम् प्रथम अंक श्लोक संख्या-1*
2. *रघुवंशम-प्रथम अंक पृष्ठ 349*
3. *अभिज्ञान शाकुन्तलम्- प्रथम अंक पृष्ठ 353*
4. *अभिज्ञान शाकुन्तलम्- प्रथम अंक श्लोक 28*
5. *अभिज्ञान शाकुन्तलम्- चतुर्थ अंक श्लोक-9*
6. *अभिज्ञान शाकुन्तलम्- चतुर्थ अंक श्लोक-12*
7. *रघुवंशम् द्वितीय सर्ग श्लोक 36, 37*
8. *रघुवंशम् पंचम सर्ग श्लोक, 8, 9*
9. *अभिज्ञान शाकुन्तलम्- छठा अंक श्लोक-01*
10. *ऋतुसंहार-छठा सर्ग 6/38/1*